संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ २,५००
वार्षिक शुल्क ₹ २००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ ५.००

● वर्ष : १२६ ● : अंक ३३ ● १५ अगस्त २०२४ (गुरुवार) श्रवण शुक्लपक्ष दशमी सम्वत् २०८१ ● दयानन्दाब्द २०० वेद व मानव सृष्टि सम्वत्: १६६०८५३१२५

78वें स्वतंत्रता दिवस पर विशेष

भारत की स्वतंत्रता के जनक महर्षि दयानन्द सरस्वती

-देवेन्द्रपाल वर्मा

महर्षि दयानन्द सरस्वती की राष्ट्रभूमि प्रेम की भावना से प्रेरित होकर भारत की स्वतंत्रता के लिए हजारों आर्य समाजी नेताओं व कार्यकर्ताओं ने लड़ाइयाँ लड़ीं, सत्याग्रह किया, जेल गये, पुलिस की लाठियाँ खायीं, फाँसी के फन्दों पर हंसते-हंसते झूल गये, देश के लिए बलिदान हो गये और अन्त में भारत को स्वतंत्र करा कर ही चैन लिया। स्वतंत्रता की लड़ाई में ८० प्रतिशत आर्य समाज ने जमीनी लड़ाई लड़ी तो दूसरी तरफ २० प्रतिशत में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस व ऑल इण्डिया मुस्लिम लीग, वह भी मिली भगत। सरकारी स्तर पर कहीं आर्य समाज का नाम नहीं आता। केवल कुछ गिने-चुने नेताओं के इर्द-गिर्द इतिहास घूमता रहता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने 'स्वराज' का आन्दोलन वास्तव में काफी पहले से ही बड़े उग्र रूप में प्रारम्भ कर दिया था। उनके अन्दर एक आध्यात्मिक और वैदिक विद्वान के रूप में युगपुरूष विद्यमान था। तो दूसरी तरफ स्पष्ट रूप से एक निडर योद्धा की झलक मिलती है। पराधीनता भारत में उन्हें एक देश भक्त सन्यासी समझा जाता था। महर्षि की मार्मिक प्रेरणाओं ने तात्याटोपे और लक्ष्मी बाई जैसी वीरांगनाओं की आत्माओं को वीरता के रंग से सराबोर कर दिया। जिसका पहला परिणाम सन् १८५७ की स्वतंत्रता-क्रान्ति के रूप में सामने आया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का देहान्त सन् १८८३ई. में हो गया, परन्तु इससे पूर्व अनेकों आर्यजनों के हृदय में स्वराज रूपी ज्योति प्रज्ज्वलित हो चुकी थी। जिनमें पहला नाम मराठी नेता जस्टिस महादेव गोविन्द राणाडे का है इनके शिष्य गोपाल कृष्ण गोखले थे। महात्मा गांधी गोखले के शिष्य थे। इसके पश्चात् बालगंगाधर तिलक, विपिन पाल, लाला लाजपतराय, सरदार अजीत सिंह, श्याम जी कृष्ण वर्मा, वीर सावरकर, लाला हरदयाल, भाई परमानन्द, मदन लाल ढींगरा, राजगुरू, सुखदेव, राम प्रसाद बिस्मिल, रोशन

लाहड़ी, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह आदि हजारों ज्ञात अज्ञात वीरों ने अपना बलिदान देकर भारत को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त कराया।

महर्षि द्वारा सत्यार्थ प्रकाश की रचना सन् १८७३ई. में पूर्ण हो चुकी थी। इसके दो वर्ष पश्चात् सन् १८७५ई. में आर्य समाज की स्थापना ऋषिवर ने की। अर्थात् विदेशी दासता से मुक्ति के लिए "सत्यार्थ प्रकाश" रूपी शास्त्र को शस्त्र बनाकर स्वतंत्रता-संग्राम हेतु (संगठन) आर्य समाज की स्थापना महर्षि की अद्भुत दूरदर्शिता थी। आर्य समाज की स्थापना के दस वर्ष बाद सन् १८८५ई. में श्री ए.ओ. ह्यूम द्वारा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की गई।

कांग्रेसी नेता अंग्रेज सरकार के आगे रोलेट एक्ट के खिलाफ सिर पटकते रहे, अंग्रेजों के कान पर जूँ तक न रेंगी, परन्तु जब अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी ने चाँदनी चौक में विशाल जुलूस निकाल कर गोरे सैनिकों की संगीनों के आगे अपना सीना खोल दिया तो सैनिक दुबक गये। अंग्रेजी सरकार भी वार्ता को तैयार हो गयी। सरदार बल्लभ भाई पटेल अक्सर कहा करते थे कि "महर्षि दयानन्द जी के सिद्धान्तों पर चलते तो देश का कभी बंटवारा नहीं होता।"

महर्षि ने संसार के कल्याण के लिए वैदिक ग्रन्थों का प्रचार-प्रसार कर, अज्ञानता, गुलामी, चाटुकारिता, पाखंड, व आडम्बरों आदि दोषों में पड़े भारतीयों को स्वाधीनता का मार्ग दिखाया। ऋषिवर ने स्वदेश, स्वभाषा, स्वदेशी वस्तु, स्व-संस्कृति तथा स्व-सभ्यता की झलक केवल अपनी वाणी व व्यवहार से ही नहीं अपने रचे ग्रन्थों में भी सर्वत्र उड़ेल दिया है। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के उत्तरार्ध भाग की भूमिका में लिखा है कि "मतमतान्तर के विवाद से जगत में जो-जो अनिष्ट फल हुए होते हैं और होंगे उनको पक्षपात रहित विद्वत्जन जान सकते हैं। जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मतमतान्तर का विरूद्धवाद न छूटेगा तब तक अन्योऽन्य को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य विशेष विद्वत्जन ईर्ष्या-द्वेष छोड़ सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना कराना चाहें तो हमारे लिए यह बात असाध्य नही है।"

महर्षि के लिखे ये वाक्य आज अक्षरशः सत्य प्रतीत हो रहे हैं। उच्च शिक्षित वर्ग में जड़ पूजा व बहुदेवता वाद की प्रवृत्ति, पाखंड का महिमा मंडन यह दर्शाती है कि आर्य समाज की शक्ति व प्रचार प्रसार का ह्रास हो रहा है। महर्षि के मिशन के प्रति वह पहले वाली तड़प व कसक क्षीण होती जा रही है। संगठन सूत्र का गान करके हम संगठित नहीं हो सकते। भवन में बैठ कर यज्ञों व प्रवचनों से भला होने की कल्पना में आर्य समाज की शक्ति कुंठित सी हो गयी है अपने स्वार्थों को राष्ट्र हित में छोड़ कर पुनः सक्रिय होने की आवश्यकता है। देश के बँटवारे का दंश झेल रहे हम भारतवासी अभी कुछ अर्सा पूर्व बंगलादेश में हुए तख्ता पलट के पश्चात् हिन्दुओं को चुन-चुन कर कट्टरपंथी निशाना बना रहे हैं। पाकिस्तान में विलुप्त हो चुके हिन्दू बंगलादेश में अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं। भारत में भी मुस्लिम जेहाद की बाढ़ सी आ गयी है। यहाँ मुस्लिम क्रूरता से, ईसाई धूरता से हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन करने में निरन्तर प्रयासरत् हैं और हिन्दू अपने अतीत व वर्तमान से कुछ सीखना ही नहीं चाहता न इसकी तह में जाना चाहता है।

अब समय आ गया है कि हर हिन्दू आत्म मंथन करे, इतिहास गवाह है कि वेदों से विमुख होने के पश्चात् ही हम गुलाम होकर पतन की गहरी खाई में गिरे। सदियों पराधीन रहे। अब कट्टरवादियों के निशाने पर मुख्य रूप से हिन्दू ही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के बताये मार्ग पर चल कर इनका मुँहतोड़ उत्तर दिया जा सकता है। कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' व अन्य अनेक वैदिक ग्रन्थों का विश्व में कोई मुकाबला नहीं। हर हिन्दू के घर में सत्यार्थ प्रकाश का होना आवश्यक है। एक ईश्वर, एक देश, एक धर्म ग्रन्थ वेद, एक भाषा एक सँस्कृति की अलख आर्यों को जोर-शोर से जगानी होगी। तभी स्वतंत्रता सिद्ध होगी अन्यथा की स्थिति में पराधीनता की बेड़ियाँ दूर नहीं।

वेदामृतम्

अरं त इन्द्र श्रबसे, गमेम शूर त्वावतः।
अरं शक्र परेमणि ।। साम २०६

हे इन्द्र ! हे परब्रह्म परमात्मन् ! तुम 'तुम जैसे' ही हो। कवि को किसी वस्तु के विषय में यह व्यक्त करना अभिप्रेत होता है कि वह वस्तु ऐसी अद्वितीय है कि जगत् में कोई उसका उपमान नहीं मिल सकता तब वह अनन्वय अलंकार का आश्रय लेकर 'वह वस्तु अपने ही समान है' इस भाषा का प्रयोग करता है। जैसे महाकवि वाल्मीकि ने कहा है कि राम-रावण का युद्ध 'राम-रावण के युद्ध जैसा ही था' - 'रामरावणयोर्युद्धं रामरावणयोरिव' । इसी प्रकार हे परमात्मन् ! हम तुम्हारे विषय में कहते हैं कि 'तुम त्वावान् हो', 'तुम तुम-जैसे ही हो', अन्य किसी सांसारिक वस्तु से तुम्हारी उपमा नहीं दी जा सकती, तुम अनुपम हो। साथ ही तुम ब्रह्मांड में सबसे अधिक 'शूर' भी हो। कोई बड़े-से-बड़ा भी सांसारिक शत्रु तुम्हें कोई क्षति नहीं पहुंचा सकता, न ही तुम जिसके रक्षक हो जाते हो, उस तुम्हारे सखा को कोई हानि पहुंचा सकता है। जो वस्तु जितनी आश्चर्यमयी होती है, उसका उतना ही यशोगान हमारे हृदय से निकलना स्वाभाविक है। हे परमैश्वर्यशालिन् ! तुम क्योंकि सबसे अद्भुत हो, सर्वातिशायी हो, इसलिए हम चाहते हैं कि हम यथाशक्ति पर्याप्त मात्रा में शोभा के साथ तुम्हारा यशोगान करने के लिए एकत्र हों। यद्यपि तुम्हारा यशोगान व्यक्तिगत रूप से अकेले बैठकर भी गाया जा सकता है, किन्तु सामूहिक गान हम इसलिए गाना चाहते हैं कि हमारे द्वारा गाये तुम्हारे यशोगीत सम्पूर्ण वातावरण में गूंजने लगे और सारा जन-मानस तथा प्रकृति का एक-एक कण तुम्हारे यशोगान से उद्वेल्लित हो उठे।

हे देव ! तुम 'शक्र' हो, परम-शक्तिशाली हो, अनन्त सामर्थ्यवान् हो। तुमसे प्रेरणा पाकर हम यथाशक्ति, पर्याप्त रूप से, शोभा के साथ परा-विद्या में प्रवृत्त होना चाहते हैं। वेदों से लेकर समस्त इतर विद्या-उपविद्याओं तक का सैद्धान्तिक ज्ञान अपरा- विद्या का विषय है। किन्तु वह साधना जिससे अक्षर-ब्रह्म की अनुभूति होती है, परा- विद्या है। उस 'परेमा' में, परा-विद्या में हम निष्णात हो सकें ऐसी शक्ति, हे परमसमर्थ प्रभु ! तुम हमें प्रदान करो। हे भगवन् ! अपने यशोगायकों की इस प्रार्थना को पूर्ण करो।

साभार-वेद मंजरी

सभा परिसर में फहराया तिरंगा

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के परिसर में ७८वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सभा प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा ने राष्ट्रीय ध्वज को फहराया। प्रधान जी ने भारत की स्वतंत्रता में ज्ञात-अज्ञात वीरों को नमन करते हुए बंगलादेश में हो रही हिंसा आदि की घटनाओं पर चिन्ता व्यक्त की और समस्त हिन्दुओं को एकजुट होने की अपील की। आर्य समाज मजबूती के साथ उनके साथ खड़ा है। इस अवसर पर डॉ. सहदेव चौधरी, कुबेर भंडारी (पू. विधायक) अखिलेश यादव, प्रीतम मौर्य, डा. कमलाकान्त यादव, विमल आर्य जी, भुवन चन्द पाठक, आशुतोष सिंह चौहान, शुभेन्दु मिश्रा, रिशाल सिंह, गोविन्द आदि उपस्थित थे।

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

पंकज जायसवाल
मंत्री/सम्पादक

आर्य शिवशंकर वैश्य
प्रबन्ध सम्पादक

सम्पादकीय.....

श्रीमद्दयानन्द सरस्वती की प्रथम जन्म शताब्दी के शुभ अवसर पर फरवरी 1925 में

श्री पं. चमूपति जी का व्याख्यान

देवियो और भद पुरुषों !

बौद्ध धर्मके प्रचारार्थ राजकुपार चीन में गया था, बर्मा में गया था. परन्तु खेद के साथ कहना पड़ता है कि आज बौद्ध धर्म को भी अप्रचारक धर्म कहा जाता है। स्वा. दयानन्द आये और उन्होंने बेद के शब्दों में नाद बजाया और कहा कि हमें सब को आर्य बनाना है। ऐसे नहीं जैसे कि मौ. ख्वाजा हसन निजामी चाहते हैं। आज स्वामी दयानन्द का नाम लेते हैं तो उनके जीवन की क्रिया मालूम हो जाती है कि किस प्रकार उन्होंने अपने मत को फैलाया था।

जिस दिन मैं लाहौर से रावलपिंडी आया उस दिन लोगों ने मुझसे कहा, कि यह वही स्थान है जहां ग्वामी दयानन्द भटकता था और लोग उसे बैठने नहीं देते थे। यह वही स्थान है जहां पर लोगों ने ईट पत्थरों से स्वामी का स्वागत किया था। अब लोग उसे खोजते हैं परन्तु वह नहीं मिलता है। आज वह दिन है कि जिस दिन संसार बदला है। जमीन आस्मान बन गई है और आस्मान जमीन बन गया है। आज लोग कहते हैं, ''स्वामी दयानन्द । आओ और अपने चरणों से हमारी आँखो को तृप्त करो।'' लाहौर में जगह नहीं मिलती थी। एक मुसलमान भाई ने जगह दी थी। जिस समय मैं लाहौर के मुसलमानों का विचार करता हूं तो सब से पहले रहनुमाखां का ध्यान आता है। सब लोग कहते हैं कि यह वही मुसलमान है जिसने स्वामी जी से अपने मकान के पास ठहराने को कहा था। उस समय में मुहम्मदअली का नजारा भूल जाता हूं। मैं उसका बड़ा कृतज्ञ हूं। स्वा. दयानन्द उस मुसलमान के कोठे पर जा उतरे। रात्री में लैक्चर होना है, विषय है 'कुरान का खंडन' । आवाज उठती है ''विचित्र प्रकार का आदमी है।'' पौराणिक अपने घर में स्थान नहीं देते हैं, ब्रह्मसमाजियों ने उसे अपनी वेदी से नीचे उतार दिया है, बड़ी कृपा से रहनुमा ने स्थान दिया है पर उस उपकार का बदला यह है कि स्वामी कुरान का खंडन करता है।'' स्वामी दयानन्द कहता है, ''इसमें सन्देह नहीं कि जब मुझे कहीं स्थान न मिला तब रहनुमाखां ने अपने घर में बसाया और सहायता के लिए आसन बिछाया। मैं भी उसे मानता हूँ। परन्तु मैंने तो घरबार छोड़ दिया है, आकाश की छत के नीचे बसेरा करता हूँ, समस्त पृथ्वी मेरा घर है। कुछ दे नहीं सकता हूँ। रुपया नहीं मान नहीं, राज्य नहीं। मैं क्या दे सकता हूँ ? एक चीज है जिसके लिए माता की तपश्चर्या को पीछे छोड़ा । पिता के प्रेम को छोड़ आया हूँ। मित्रों की मित्रता को त्याग आया हूँ। अनाथ हो गया हूँ। अकिंचन हो गया हूँ। जंगलों में फिरता हूँ। पहाड़ों में फिरता हूँ। झाड़ियों के अन्दर कांटों को लांघ कर फिरता हूँ। किस लिए? एक सत्य की खोज के लिये। किसी ऋषि के विषय में सुनता हूँ कि जंगलों में रहते हैं और वहीं पहुँचता हूं।"

एक स्थान पर एक पादरी स्वामी जी का भक्त बन गया है। वह गिर्जा में उनकी प्रार्थना किया करता है। एक ईसाई पादरी स्वामी दयानन्द के चरणों में गिरता है और उसका नाम पड़ता है भक्त स्कोट ।

बह प्रति दिन आता है। एक दिन स्कोट भक्त नहीं आया। क्यों नहीं आया ? आज रविवार है। एक दिन ऋषि दयानन्द गिर्जा में जाता है और वहाँ उपदेश बन्द हो जाता है। स्वामी जी को उपदेश देने के लिए खड़ा किया जाता है। वह उपदेश देते हैं। वह उपदेश क्या है ? वेद कहता है कि सारे संसार को आर्य बनाओ ।

दूसरे धर्मों ने अपना-अपना प्रचार किया। किसी ने तलवार से और किसी ने धन से । स्वामी दयानन्द ने धर्म के मार्ग से किया। वह अधर्म के मार्ग से नहीं कर सकते थे ! यह क्रियात्मक उपदेश है। आज तो राजनैतिक क्षेत्र में उपदेश दिया जाता है कि यदि धर्मोपदेश होगा तो मंतभेद उत्पन्न होगा। आप विचार करें कि इतना झगड़ा बढ़ गया है अतः हमें उदार बनना आवश्यक है। स्वामी दयानन्द के आने से पहले आर्यों की आंखें नीची थीं। स्वामी जी ने उन्हें ऊँचा कर दिया ।

हम आज मथुरा नगरी में शिष्य भाव से आये हुए हैं। अतः यह विचार लेकर जांय कि ऋषि सारे संसार के लिए था। हम भी समस्त संसार के हो जायें। भारत के लिये ही नहीं, एशिया के लिये ही नहीं। एण्ड्रयूज लिखता है कि फिजी, मौरीशस और इंग्लैण्डादि द्वीपों में स्वामी का नाम रोशन है। इससे मैं समझता हूँ कि उसका नाम सार्वभौम होने वाला है। अब आर्यों का यह कर्तृतव्य हो गया है कि वे अपने जीवन को प्रचार के अर्पण कर दें और जियें तो इस लिये जियें कि वेदों के सन्देश का प्रचार करना है। जब मुसलमान मेरी आंखों के सामने आते हैं तब मुझे उनके अगुआ रहनुमा खां की याद आती है और जब ईसाई सामने आते हैं तब भक्त स्कोट की याद आती है। मेरी हादिक इच्छा है कि लोग इसी प्रकार लोगों का उपकार करते हुए ईश्वर के भक्त बनें ।

गतांक से आगे.....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ चतुर्दशसमुल्लासारम्भः

अथ यवनमतविषयं व्याख्यास्यामः

६८-आज्ञा मानो अल्लाह की और आज्ञा मानो रसूल की॥

-मं० २० सि० सि० ७। सू० ५। आ० ९२॥

(समीक्षक) देखिये! यह बात खुदा के शरीक होने की है। फिर खुदा को 'लाशरीक' मानना व्यर्थ है॥ ६८॥

६९-अल्लाह ने माफ किया जो हो चुका और जो कोई फिर करेगा अल्लाह उस से बदला लेगा।

-सं० २। सि० ७। सू० ५। आ० ९५॥

(समीक्षक) किये हुए पापों का क्षमा करना जानो पापों को करने की आज्ञा देके बढ़ाना है। पाप क्षमा करने की बात जिस पुस्तक में हो वह न ईश्वर और न किसी विद्वान् का बनाया है किन्तु पापवर्द्धक है। हां । आगामी पाप छुड़वाने के लिये किसी से प्रार्थना और स्वयं छोड़ने के लिये पुरुषार्थ पश्चात्ताप करना उचित है परन्तु केवल पश्चात्ताप करता रहे, छोड़े नहीं, तो भी कुछ नहीं हो सकता॥ ६९॥

७०-और उस मनुष्य से अधिक पापी कौन है जो अल्लाह पर झूठ बांध लेता है और कहता है कि मेरी ओर वही की गई परन्तु वही उस की ओर नहीं की गई और जो कहता है कि मैं भी उतारूंगा कि जैसे अल्लाह उतारता है॥

- मं० २। सि० ७। सू० ६। आ० ९३॥

(समीक्षक) इस बात से सिद्ध होता है कि जब मुहम्मद साहेब कहते थे कि मेरे पास खुदा की ओर से आयतें आती हैं तब किसी दूसरे ने भी मुहम्मद साहेब के तुल्य लीला रची होगी कि मेरे पास भी आयतें उतरती हैं, मुझ को भी पैगम्बर मानो। इस को हटाने और अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिये मुहम्मद साहेब ने यह उपाय किया होगा॥ ७०॥

७१-अवश्य हम ने तुम को उत्पन्न किया, फिर तुम्हारी सूरतें बनाई। फिर हम ने फरिश्तों से कहा कि आदम को सिजदा करो, बस उन्होंने सिजदा किया परन्तु शैतान सिजदा करने वालों में से न हुआ। कहा जब मैंने तुझे आज्ञा दी फिर किस ने रोका कि तूने सिजदा न किया, कहा मैं उस से अच्छा हूँ, तूने मुझ को आग से और उस को मिट्टी से उत्पन्न किया।। कहा बस उस में से उतर, यह तेरे योग्य नहीं है कि तू उस में अभिमान करे॥ कहा उस दिन तक ढील दे कि कबरों में से उठाये जावें।। कहा निश्चय तू ढील दिये गयों से है। कहा बस इस की कसम है कि तूने मुझ को गुमराह किया. अवश्य में उन के लिये तेरे सीधे मार्ग पर बैठूंगा । और प्रायः तू उन को धन्यवाद करने वाला न पावेगा। कहा उस से दुर्दशा के साथ निकल, अवश्य जो कोई उन में से तेरा पक्ष करेगा तुम सब से दोजख को भरूंगा॥

-मं० २। सि० ८। सू० ७। आ० ११।१२।१३।१४। १५।१६।१७॥

(समीक्षक) अब ध्यान देकर सुनो खुदा और शैतान के झगड़े को। एक फरिश्ता, जैसा कि चपरासी हो, था। वह भी खुदा से न दबा और खुदा उस के आत्मा को पवित्र भी न कर सका। फिर ऐसे बागी को जो पापी बना कर गदर करने वाला था उस को खुदा ने छोड़ दिया। खुदा की यह बड़ी भूल है। शैतान तो सब को बहकाने वाला और खुदा शैतान को बहकाने वाला होने से यह सिद्ध होता है कि शैतान का भी शैतान खुदा है। क्योंकि शैतान प्रत्यक्ष कहता है कि तूने मुझे गुमराह किया। इस से खुदा में पवित्रता भी नहीं पाई जाती और सब बुराइयों का चलाने वाला मूल कारण खुदा हुआ। । ऐसा खुदा मुसलमानों ही का हो सकता है. अन्य श्रेष्ठ विद्वानों का नहीं। और फरिश्तों से मनुष्यवत् वार्तालाप करने से देहधारी, अल्पज्ञ, न्यायरहित मुसलमानों का खुदा है। इसी से विद्वान् लोग इसलाम के मजहब को पसन्द नहीं करते॥ ७१॥

क्रमशः अगले अंक में...

दयानन्द शास्त्रार्थ प्रश्नोत्तर-संग्रह

ईश्वरीय ज्ञान अनादि है

(रविवार १७ सितम्बर, सन् १८८२ तदनुसार भादों सुदि पंचमी संवत् १९३९ विक्रमी)

सातवाँ प्रश्न –

मौ०-यदि वेद ईश्वर का बनाया होता तो अन्य प्राकृतिक पदार्थों सूर्य, जल तथा वायु के समान संसार के समस्त साधारण मनुष्यों को लाभ पहुंचाना चाहिए था ।

स्वा०-सूर्यादि सृष्टि के समान ही वेदों से सबको लाभ पहुंचता है क्योंकि सब मतों और विद्या की पुस्तकों का आदिकारण वेद ही हैं। और इन पुस्तकों में विद्या के विरुद्ध जो बातें हैं वे अविद्या के सम्बन्ध से हैं क्योंकि वे सब पुस्तकें वेद के पीछे बनी हैं। वेद के अनादि होने का प्रमाण यह है कि अन्य प्रत्येक मत की पुस्तक में वेद की बात गौण अथवा प्रत्यक्ष रूप से पाई जाती है और वेदों में किसी का खंडन मंडन नहीं। जैसे सृष्टि विद्या वाले सूर्यादि से अधिक उपकार लेते हैं वैसे ही वेद के पढ़ने वाले भी वेद से अधिक उपकार लेते हैं और नहीं पढ़ने वाले कम ।

मौ०-कोई इस दावे को स्वीकार नहीं करता कि किसी काल में वेद को समस्त मनुष्यों ने माना हो और न किसी मत की पुस्तक में प्रत्यक्ष अथवा गौण रूप से वेदों का खंडन मंडन पाया जाता है।

स्वा०- वेद का खंडन मंडन पुस्तकों में है, जैसे कुरान में बेकिताब वाले और एक उसी ईश्वर के मानने वाले जैसे बाइबिल में पिता पुत्र और पवित्रात्मा, होम की भेंट, ईश्वर को प्रिय, याजक, महायाजक, यज्ञ, महायज्ञ आदि शब्द आते हैं। जितने मतों के पुस्तक बने हुए हैं-बीच के काल के हैं। उस समय के इतिहास से सिद्ध है कि मुसलमान, ईसाई आदि जंगली थे तो जंगलियों को विद्या से क्या काम । पूर्व के विद्वान् पुरुष वेदों को मानते थे और वर्तमान समय में शब्द विद्या (फिलालोजी) के परीक्षक मोक्षमूलर आदि विद्वान् भी संस्कृत भाषा तथा ऋग्वेदादि को सब भाषाओं का मूल निश्चित करते हैं। जब बाइ- बिल कुरान नहीं बने थे तब वेद के अतिरिक्त दूसरी मानने योग्य पुस्तक कोई भी नहीं थी । मनुष्य की उत्पत्ति का आदि काल ही ऋषियों की वेदप्राप्ति का समय है जिसको १९६०८५२८६७ वर्ष हुए। इससे प्राचीन कोई पुस्तक नहीं है ।

पांडे मोहनलाल जी ने कहा कि मौलवी साहवं के शास्त्रार्थ के प्रथम दिन राणासाहब नहीं आये थे परन्तु उन्होंने शास्त्रार्थ लिखित होना स्वीकार किया था । अन्तिम दिन श्री महाराज पधारे और मौलवी साहब की हठ देखकर श्री दर्बार साहब ने कहा कि जो कुछ स्वामी जी ने कहा है वह निस्सन्देह ठीक है। फिर शास्त्रार्थ नहीं हुआ। कविराज श्यामलदास जी ने भी इसका समर्थन किया।

धार्मिक, सामाजिक अंधविश्वासों व पाखण्डों का कारण अविद्या है

-मनमोहन कुमार आर्य

हमारे देश में अनेक प्रकार के धार्मिक व सामाजिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड प्रचलित हैं। इन अन्धविश्वासों एवं पाखण्डों का कारण देश में प्रचलित सभी मत-मतान्तरों की अविद्या है। इस अविद्या के कारण अनेक प्रकार की कुरीतियां भी प्रचलित हैं और सामाजिक विद्वेष उत्पन्न होने सहित किन्हीं दो समुदायों में हिंसा भी होती रहती है। अन्धविश्वासों व पाखण्डों का कारण अविद्या है, यह सत्य होने पर भी कोई मत-मतान्तर इसे स्वीकार नहीं करता। सभी मतों के आचार्य एवं उनके अनुयायी मुख्यतः अविद्या एवं अपने-अपने प्रयोजन की सिद्धि आदि के कारण जानबूझकर भी सत्य वैदिक मत को स्वीकार नहीं करते। यह भी तथ्य है कि महाभारतकाल के बाद लोगों के आलस्य व प्रमाद के कारण वैदिक धर्म का सत्यस्वरूप विकृत व विलुप्त हो गया था। लोगों ने वेदाध्ययन करने में प्रमाद किया जिससे सत्य वेदार्थ विलुप्त होते गये। कुछ स्वार्थी प्रकृति के लोगों ने अपनी अविद्या के कारण वेदों के मिथ्या व भ्रान्तियुक्त अर्थ भी किये जिससे समाज में मिथ्या विश्वासों की वृद्धि हुई। समय बीतने के साथ समाज में अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड तथा सामाजिक कुरीतियों में वृद्धि होती गई। बौद्ध काल में महात्मा बुद्ध ने मुख्यतः यज्ञ में पशु हिंसा एवं अन्य कुप्रथाओं का विरोध किया। उनकी मृत्यु के बाद उनके अनुयायियो ने बौद्धमत की स्थापना की। इसी कालावधि में देश में महावीर स्वामी के अनुयायियों ने जैनमत की भी स्थापना की। लोग वैदिक मत छोड़कर नव-बौद्ध-मत व जैनमत को स्वीकार करने लगे। कालान्तर में स्वामी शंकराचार्य जी का आविर्भाव हुआ। उन्होंने बौद्ध व जैन मत की ईश्वर के अस्तित्व को न मानने के सिद्धान्त को वेद विरुद्ध होने के कारण उनसे शास्त्रार्थ करके उनकी मान्यताओं का खण्डन किया और विजयी हुए। इसके परिणाम स्वरूप तत्कालीन जैनी वा बौद्धमत के राजाओं ने स्वामी शंकराचार्य के अद्वैतमत को स्वीकार किया। इससे बौद्ध व जैन मत पराभव को प्राप्त हुए और स्वामी शंकराचार्य जी का मत देश भर में प्रचलित हुआ। ऐसा होने पर भी देश व समाज से अज्ञान व अन्धविश्वास आदि समाप्त न हुए और अल्पकाल में ही स्वामी शंकराचार्य जी की मृत्यु के कारण बौद्ध व जैन मत पुनः प्रभावशाली होने लगे। बौद्ध व जैन मत भी सत्य पर आधारित न होने के कारण वह भी सर्वमान्य नहीं हुए। वैदिक मत के अन्धविश्वास व मिथ्या परम्पराओं में वृद्धि होती गई। इस कारण वह भी वेद की सत्य मान्यताओं से बहुत दूर चले गये। कालान्तर में देश में १८ पुराणों का प्रचलन हुआ जिससे अनेक पौराणिक मत अस्तित्व में आये। मुख्य मत शैव, वैष्णव व शाक्त थे। कालान्तर में इनकी भी अनेक शाखायें हुईं और अन्य अनेक नये मत प्रचलित हो गये जिनका आधार सत्य ज्ञान न होकर अविद्या थी। स्वामी दयानन्द (१८२५-१८८३) के समय तक देश में मत-मतान्तरों की वृद्धि के साथ अन्धविश्वासों व कुप्रथाओं में भी अभूतपूर्व वृद्धि हुई और आज भी यह क्रम बढ़ता ही जा रहा है।

संसार में जितने भी मत-मतान्तर हैं उनमें कुछ ज्ञानपूर्वक मान्यतायें भी हैं, वह सब मतों में समान हैं। मत-मतान्तरों की जो मान्यतायें भिन्न व परस्पर विरुद्ध हैं, उसका कारण अज्ञान वा अविद्या है। धर्म सार्वभौमिक सत्य सिद्धान्तों को कहते हैं जिनका प्रतिपादन सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने वेदों में किया है। वेद की सभी बातें व सिद्धान्त सत्य पर आधारित हैं। हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों ने वेद के सिद्धान्तों की परीक्षा कर इसे सत्य व धर्म का मूल सिद्ध किया था। ऋषि दयानन्द ने अपने समय में भी वेदों के सिद्धान्तों को समग्रता व सम्पूर्णता से सत्य पाया और उसका प्रचार किया। उन्होंने डिन्डिम घोष कर कहा कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। इसके साथ उन्होंने यह सिद्धान्त भी दिया कि 'सब सत्य विद्या (चार वेद) और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल परमेश्वर है।' इसका अर्थ यह है कि चार वेद और सृष्टि के पदार्थ जिन्हें हमारे विद्वान व वैज्ञानिक विद्या से जानते हैं उन सब पदार्थों का आदि मूल अर्थात् रचयिता, उन्हें बनानेवाला व पालक परमेश्वर है। वेदों के आधार पर ऋषि दयानन्द ने ईश्वर व जीवात्मा का सत्यस्वरूप भी जनसमुदाय के सम्मुख रखा और घोषणा की कि ''ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।'' आज भी कोई मत व उनका बड़ा या छोटा आचार्य और वैज्ञानिक ऋषि दयानन्द के इस सत्य सिद्धान्त को झुठला नहीं पाया। इससे ईश्वर विषयक यह सिद्धान्त सत्य सिद्ध हुआ है।

जीवात्मा अर्थात् मनुष्यात्मा व प्राणिमात्र की आत्मा के विषय में ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' में लिखा है कि जो इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख और ज्ञानादि गुणयुक्त अल्पज्ञ (सत्ता) नित्य है उसी को 'जीव' (आत्मा वा जीवात्मा) मानता हूं। उन्होंने जीव और ईश्वर के स्वरूप के विषय में आगे लिखा कि जीव और ईश्वर स्वरूप और वैधर्म्य से भिन्न और व्याप्य-व्यापक और साधर्म्य से अभिन्न हैं अर्थात् जैसे आकाश से मूर्तिमान् द्रव्य कभी भिन्न न था न है, न होगा और न कभी एक था, न है, न होगा इसी प्रकार परमेश्वर और जीव को व्याप्य-व्यापक, उपास्य-उपासक और पिता-पुत्र आदि सम्बन्धयुक्त मानता हूं। ऋषि दयानन्द अभाव से भाव का उत्पन्न होना व भाव का अभाव होना नहीं मानते। यह आधुनिक विज्ञान का नियम भी है कि हर पदार्थ की उत्पत्ति का कोई एक व कुछ उपादान कारण होते हैं। उस उपादान कारण से ही ज्ञान व शक्ति का प्रयोग कर कोई चेतन सत्ता, ईश्वर व मनुष्य, नया पदार्थ बना सकते हैं। ऋषि दयानन्द ने भी दर्शनों के आधार पर इस सृष्टि का निमित्त कारण ईश्वर तथा उपादान कारण प्रकृति को बताया हैं। वैदिक सिद्धान्तों से भी कारण-कार्य सिद्धान्त पुष्ट होता है। यह भी महत्वपूर्ण बात है कि किसी वेद में अन्य मत-मतान्तरों के ग्रन्थों की तरह यह नहीं लिखा व कहा है कि ईश्वर ने कहा कि 'हो जा' या 'बन जा' और इतना कहने मात्र से ही यह ब्रह्माण्ड बन गया। ऐसा कहना व मानना अज्ञानता व सत्य का परिहास है। महर्षि दयानन्द के वैदिक सिद्धान्तों का किसी भी मत व वैज्ञानिकों ने खण्डन नहीं किया। उनमें खण्डन की क्षमता है भी नहीं। हमारा मत है कि जो बात तर्क व युक्ति से सिद्ध हो वह सत्य होती है और वही विज्ञान भी है। ईश्वर व जीवात्मा के सम्बन्ध में वेद, दर्शन और ऋषि दयानन्द सहित हमारे सभी ऋषि पर्याप्त प्रमाण देते हैं। अतः संसार में वेद और वैदिक सिद्धान्त, जो महर्षि दयानन्द आदि ऋषियों के ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश आदि में वर्णित हैं, वह पूर्ण सत्य व पूरे विश्व के सभी लोगों के लिए मान्य व स्वीकार्य होने चाहिये। इन्हें मानकर ही देश व समाज सुखी हो सकता है और साथ ही कल्याण को प्राप्त हो सकता है। समस्त मानव समाज मिथ्या अन्धविश्वासों सहित पाखण्डों से मुक्त भी हो सकता है।

अन्धविश्वास का अर्थ होता है कि किसी असत्य, समाज को हानि पहुंचाने वाली व उनमें पक्षपात व भेदभाव पैदा करने वाली मान्यता व सिद्धान्त को सत्य स्वीकार कर उसका आचरण करना। ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वातिसूक्ष्म, निराकार, सर्वशक्तिमान, अजन्मा आदि गुणों वाला है। सर्वव्यापक व निराकार स्वरूप वाले ईश्वर की मूर्ति व आकृति कदापि नहीं बनाई जा सकती। ईश्वर प्रत्येक स्थान पर होने से मूर्ति के अन्दर व बाहर दोनों स्थानों पर होता है। फिर मूर्ति के बाहर स्वीकार न करना व उसे दृष्टि से ओझल करना, मूर्ति से बाहर उसका ध्यान न करना, ईश्वर को मूर्ति में ही मानना तथा उस पाषाण जड़ मूर्ति से अपनी इच्छाओं की पूर्ति व कामनाओं को सफल होना मानना यह घोर अविद्या व अज्ञान है। ऋषि दयानन्द और वेदों की मान्यता है कि हम मूर्ति की कितनी भी पूजा कर लें, उससे हमें किसी प्रकार के सुख व कामना पूर्ति आदि का कोई लाभ नहीं होता। इसके स्थान पर यदि हम ईश्वर को निराकार, सर्वव्यापक, सर्वत्र उपलब्ध वा विद्यमान तथा सर्वशक्तिमान मानकर गायत्री मन्त्र आदि से उसका ध्यान, प्रार्थना व उपासना करते हैं तो इससे ईश्वर हमारी प्रार्थना को स्वीकार करता है। फलित ज्योतिष भी मिथ्या ज्ञान है। इसको मानने से मनुष्य अपनी हानि ही करता है, लाभ इससे कुछ होता नहीं। आज विज्ञान ने विश्व में जो उन्नति की है वह फलित ज्योतिष की उपेक्षा करके ही की है। हर्ष का विषय है कि हमारे वैज्ञानिक भी फलित ज्योतिष को नहीं मानते। विवाह के अवसर पर जन्म-पत्रियों का मिलान फलित ज्योतिष की मान्यताओं के आधार पर करते हैं। इस कारण कई योग्य वर-वधुओं के विवाह नहीं हो पाते। हमने ऐसे ज्योतिषी भी देखें हैं जिन्होंने किसी वृद्ध महिला को बताया कि तुम्हारे परिवार में पुत्र के यहां पुत्र उत्पन्न न होगा। वह महिला मर गई और उसके बाद उसके पुत्र के यहां दो पुत्र हो गये। वेदों के सत्य व यथार्थ अर्थों का प्रकाश करने वाले ऋषि दयानन्द ने भी फलित ज्योतिष को मिथ्या और देश की गुलामी का प्रमुख कारण माना है। फलित ज्योतिष को सब सत्य विद्याओं के ग्रन्थ चार वेदों से सिद्ध नहीं किया जा सकता।

मृतक श्राद्ध भी मिथ्या मान्यता है। मरने के बाद जीवात्मा का पुनर्जन्म हो जाता है या फिर लाखों व करोड़ों आत्माओं में किसी एक धर्मात्मा व वेदज्ञानी मनुष्य की आत्मा का मोक्ष होता है। अन्य सब आत्माओं का पुनर्जन्म होना निश्चित है। जिस आत्मा का पुनर्जन्म हो गया उसे भोजन जहां उसका जन्म हुआ है, वहां उसके माता-पिता आदि व वह स्वयं पुरुषार्थ कर प्राप्त करेगा। यहां से बिना पते के भोजन वहां कदापि नहीं पहुंच सकता। वर्ष में एक दो बार भोजन बनाकर अग्नि में डाल देने से मृतक का पूरे वर्ष के लिए पेट नहीं भर सकता। यदि यह मान लें कि मृतक आत्मा का जन्म नहीं हुआ तो भी उस अजन्मी आत्मा को तो भोजन की आवश्यकता ही नहीं होगी। भोजन की आवश्यकता तो शरीर को होती है न कि आत्मा को। अतः मृतक श्राद्ध भी अन्धविश्वास व पाखण्ड है और इसे कुछ लोगों ने अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए बनाया हुआ प्रतीत होता है। जन्मना जातिवाद भी एक बहुत बड़ा अन्धविश्वास व कुपरम्परा है। अतीत में यह बहुत से निर्दोष लोगों पर सबल लोगों के अत्याचार का कारण बना है। ऋषि दयानन्द ने अपने जीवनकाल में सबसे पहले इसका विरोध किया था। आज के आधुनिक युग में जन्मना जातिवाद जारी है। यह लोगों के अज्ञान व अविद्या के कारण ही विद्यमान है अन्यथा इसे आज और अभी समाप्त कर देना चाहिये। किसी को भी जन्मना जातिवाचक शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिये। अपने बच्चों के विवाह भी सबको गुण, कर्म व स्वभाव के आधार पर वैदिक धर्म के भीतर ही करने चाहियें। अवतारवाद भी एक मिथ्या मान्यता है। सत्यार्थप्रकाश में इस मान्यता को तर्क एवं प्रमाणों के आधार पर असत्य सिद्ध किया गया है। वैदिक मान्यताओं के अनुसार सृष्टि का रचयिता और सर्वव्यापक जगदीश्वर ही एकमात्र सब मनुष्यों का उपासनीय है। मनुष्यों को धर्मगुरुओं के प्रभाव में आकर ईश्वर के सत्य सर्वव्यापकस्वरूप की उपासना व यज्ञ आदि कर्मों से पृथक नहीं होना चाहिये अन्यथा उन्हें जन्म-जन्मान्तर में इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। परलोक में कोई धर्मगुरु हमारा सहायक नहीं होगा। अविद्या और अन्धविश्वास केवल हिन्दुओं में ही नहीं हैं अपितु बौद्ध, जैन, ईसाई व मुसलमानों सहित सभी मत-मतान्तरों में हैं। ऋषि दयानन्द ने सत्य के निर्णयार्थ सत्यार्थप्रकाश में मत-मतान्तरों की अविद्या व अन्धविश्वासों का दिग्दर्शन कराया है। सभी समझदार व बुद्धिमान मनुष्यों को सत्यासत्य का विचार कर अन्धविश्वास और पाखण्डों सहित मिथ्या कुपरम्पराओं का त्याग करना चाहिये और सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ को पढ़कर एकमात्र सत्य वैदिक धर्म की शरण में आकर अपने जीवन को सुखी व कल्याण से युक्त करना चाहिये।

●●●

तिरंगा प्यारा

-आचार्या विमलेश बंसल ''आर्या''

मेरा भारत देश सुहाना, जिसकी संस्कृत धारा है।
हो जाऊं बलिदान देश हित, कफन तिरंगा प्यारा है।।

गुरुकुल मंदिर देवालय बहु, गूंजे स्वाहा स्वधा सदा।
साधु संत ऋषियों मुनियों की, फूंके वाणी शंख यहां।
वेद उपनिषद षड्दर्शन, सबने मिल ॐ उच्चारा है।।
हो जाऊं बलिदान देश हित, कफन तिरंगा प्यारा है।।

वीर भगत, बंदा वैरागी, लक्ष्मी बाई, धीर सुभाष।
लाल बहादुर, विपिन चंद्र और तिलक सभी दीवाने खास।

लाला लाजपत, श्रद्धानंद, बलिदान जगत में भारा है।।
हो जाऊं बलिदान देश हित, कफन तिरंगा प्यारा है।।

देखें यदि इतिहास उठाकर, पन्ना का अद्भुत था त्याग।
रानी हाड़ा शीश काटती, पद्मा का जौहर तप आग।
गगन विहार करें जो परियाँ, शौर्य सुनीता (कल्पना) न्यारा है।।
हो जाऊं बलिदान देश हित, कफन तिरंगा प्यारा है।।

मंगल पांडे, खुशीराम के, शौर्य को भूल न सकते हम।
ऋषि दयानंद की आहुति, सत्यार्थ अमर संदेश दे शम।
लाल चार अपने गुरु वारे, चुन चुन ईंट और गारा है।।
हो जाऊं बलिदान देश हित, कफन तिरंगा प्यारा है।।

मेरी भी आहुति है सुनिश्चित, जिसमें पली बढ़ी जन्मी।
जब तक प्राण रहें तन में, होने दूंगी खुशबू न कमी ।।
वंदन, नमन विमल मेरा ये, उतार दूं मां ऋण सारा है।।
हो जाऊं बलिदान देश हित, कफन तिरंगा प्यारा है।।

अवतारवाद और प्रभु के दूत पूत

-पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥

श्रीमद्भगवद्गीता ४/७-८

ऐ अर्जुन जब कभी धर्म का पतन होता है तो उसको फिर से उठाने के लिए मैं स्वयं को उत्पन्न करता हूं । भले मनुष्यों की रक्षा करने तथा बुरे लोगों को नाश करने के लिए मैं हर युग या काल में जन्म लेता हूं।

गीता के इन श्लोकों को ईश्वर के अवतार लेने के विषय में प्रस्तुत किया जाता है। श्रीकृष्ण ईश्वर के अवतार थे और अर्जुन से कहते थे कि जब-जब धर्म का नाश होता है और पाप बढ़ जाता है तो धर्म पर चलने वालों की सहायता के लिए और खराब लोगों को नाश करने के लिए जन्म लेता हूं। इस विचारधारा के अनुसार जब-जब वैदिक धर्म पर आपत्ति आई और वेदों के विरोधियों ने सर उठाया तब-तब परमात्मा ने स्वयं मनुष्य के स्वरूप में अवतरित होकर बुरे मनुष्यों का नाश किया और धर्म का पुनरुद्धार किया। यह विचार हिन्दू धर्म की एक आधारशिला है। महाभारत से पूर्व नरसिंह अवतार, शुक्र अवतार, कच्छ अवतार (कछुवे के रूप में) मच्छ अवतार (मीन के रूप में), राम अवतार आदि होते रहे। इन अवतारों ने राक्षसों को मारकर धर्म को पुनर्जीवित किया।

भारतवर्ष के बाहर इसी नियम ने एक नया रूप ग्रहण किया, उन्होंने इस बात को अधर्म समझा कि ईश्वर अपने उच्च स्थान को छोड़कर धरती के निचले फर्श पर प्रकट होने की आवश्यकता को अनुभव करे। सर्वशक्तिमान् ईश्वर सभी कुछ कर सकता है। फिर उन्होंने देखा कि राजा समस्त कार्य स्वय नहीं करता उसे क्या आवश्यकता कि अपने सिंहासन से नीचे उतरे ? उसके सेवक काफी हैं। इसलिए जर्तुश्त आदि लोगों ने एक नया मत निकाला। इस मत के अनुसार जब कभी धर्म का पतन हुआ है तो ईश्वर ने स्वयम् अपने नबियों को संसार में भेजा है कि वह संसार में लोगों को सत्य मार्ग दिखायें और दुर्जनों का नाश करें। इसलिए जो पथ-प्रदर्शक पाश्चात्य देशों में हुए वे ईश्वर तो न थे, परन्तु ईश्वर के एजेण्ट या गवर्नर जनरल अवश्य थे। उनका वही लक्ष्य था जो अवतारों से सम्बन्धित किया जाता है। राम के साथ रावण और कृष्ण के साथ कंस का सम्बन्ध है।

मूसा के साथ फिर ऊन का और ईसा के साथ यहूदी पुजारियों का सम्बन्ध है। हजरत मुहम्मद साहब के साथ मक्का और मदीना के काफिरों का एक समूह था, जिससे वह निरन्तर युद्ध करते रहे।

क्यों कोई अवतार व नबी नहीं आया ?

वेदों का विचार इसके विपरीत है। वेदान्तदर्शन में जहां यह प्रश्न उठाया गया है कि ब्रहा क्या है ? तो उसका उत्तर दिया गया कि वह सर्वोत्तम सत्ता जिससे सृष्टि की रचना पालन-पोषण और अन्त होता है वही ईश्वर है। यह ईश्वर हर क्षण किसी न किसी वस्तु को जन्म देता और बढ़ाता रहता है तथा उसको मारता भी है। कुरान में भी तो बहुधा आता है कि ईश्वर वह है जो जीवन से मृत्यु तथा मृत्यु से जीवन देता है। हरेक की जन्म और मृत्यु यदि उसी के हाथ में है तो उसे स्वयं जन्म लेने या नबी (देवदूत) भेजने की आवश्यकता नहीं। राजा अपने दूतों को वहां भेजता है जहां वह स्वयं पहुंच नहीं सकता। ईश्वर तो सीमित सत्ता तथा सीमित शक्ति वाला नहीं। यह हुई युक्ति। अब इतिहास की ओर आइये। हम देखते हैं कि मनुष्यों पर कठिन से कठिन दुःख आये और वे पथ से विचलित भी हुए और अविद्या में भी पड़े रहे परन्तु न तो कोई अवतार हुआ और न कोई नबी या पैगम्बर आया। आज भी बहुत से असभ्य अशिक्षित समाज हैं। इन समाजों पर शासन करने के लिए शक्तिशाली जातियां कुछ न कुछ किया करती हैं। इन समाजों में स्वयं भी बहुत सी आन्तरिक त्रुटियां हैं, जो उनकी सफलता में बाधक होती हैं। परन्तु कोई पैगम्बर या नवी नहीं आता । यदि हजरत ईसा के अवतार की बात सत्य होती तो आज दो हजार वर्षों से सैकड़ों समाजे नाश होती रहीं और कोई ईसा फिर न आया और न मुहम्मद साहब और उनके स्थान पर किसी दूसरे ने जन्म लिया। भारतवर्ष में हत्याएं होती रहीं, जीवित विधवाएं अपने मरे हुए पतियों के साथ जलाई जाती रहीं, न कोई अवतार बचाने आया और न कोई पैगम्बर समझाने आया।

ईश्वर अपना कार्य करता है मनुष्य का नहीं–

इससे ज्ञात होता है कि यहां जो श्लोक गीता का हम ने दिया है वह केवल स्वयं स्वार्थियों का दम्भ है। परमात्मा मनुष्य के सुधार के लिए न स्वयं आता है और न किसी को भेजता है। वैदिक काल में सैकड़ों ऋषि मुनि और समाज सुधारक उत्पन्न हुए। उन्होंने पथ-प्रदर्शन का कार्य भी किया और लोगों को सन्मार्ग से डिगने से भी बचाया, परन्तु उन्होंने कदापि पैगम्बर होने का दावा नहीं किया। वे केवल अपने उस धर्म का पालन करते रहे जो एक पण्डित अपने काल के अज्ञानी समाज के लिए करता है या एक अध्यापक अपने शिक्षार्थियों के लिए करता है। यदि हम प्राकृतिक नियमों को ध्यान पूर्वक देखें तो ज्ञात होता है कि जो काम मनुष्य को करना चाहिए वह ईश्वर स्वयं नहीं करता। यदि आप अपने घर की मरम्मत न करें तो आंधी बरसात में वह घर गिर जायेगा। ईश्वर अवतार लेकर इस घर की मरम्मत और रक्षा न करेगा। यदि आप अपने शरीर को प्रतिदिन शुद्ध न करें तो परमात्मा आपके मुख को नहीं धोता। परमात्मा प्रेरणा करता है। आदेश नहीं देता। जब हम रात को सोने के पश्चात् सवेरे उठते हैं तो प्राकृतिक नियमों के अनुसार हमारे हृदय में यह इच्छा उत्पन्न होती है कि अपने मुंह को शुद्ध करें। मकान साफ किया जाये ईश्वर स्वयं झाड़ू नहीं लगाता। इसी प्रकार अशिक्षित जनता में शिक्षा की इच्छा तो रहती है किन्तु ईश्वर स्वयम् अवतार लेकर कभी स्कूल या पाठशाला खोलने नहीं आता। प्रेरणा भिन्न वस्तु है, और आदेश भिन्न वस्तु। यदि ईश्वर की ओर से आदेश होता तो कौन-सी शक्ति थी जो उस आदेश की पूर्ति में विघ्न डाल सकती? इसलिए अवतार लेना या पैगम्बर भेजना यह एक निरर्थक विचार है, वेदों की शिक्षा के विरुद्ध है और इस विश्वास ने धोखेबाजों को दम्भ करने का अवसर प्रदानं किया है। जिस मनुष्य में कुछ असाधारण बुद्धि या शक्ति होती है, वही पैगम्बरी का दावेदार हो जाता है।

ईश्वर सब को भेजता है किसी एक को नहीं–

आर्यसमाज के लोगों पर भी गीता के उपर्युक्त श्लोक का हम बहुधा कुछ न कुछ प्रभाव पाते हैं। बहुधा लोगों को कहते सुना है कि वैदिक धर्म की ग्लानि देखकर ईश्वर ने हमारे पथप्रदर्शन के लिए स्वामी दयानन्द को भेजा। तात्पर्य यह है कि वह ईश्वर के भेजे हुए रसूल या पैगम्बर थे। एक दूसरे स्वामी दयानन्द हुए हैं जो सनातन धर्म के प्रसिद्ध उपेदशक थे। उन्होंने अपनी पुस्तक ''धर्मकल्पद्रुम'' में लिखा है कि आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द भी ईश्वर के अवतार थे। यह अवतारों की परम्परा बराबर चल रही है।

महर्षि दयानन्द ने कभी ऐसा दावा नहीं किया। महर्षि दयानन्द की यह स्वाभाविक इच्छा थी कि वह पथ-भ्रष्ट लोगों को सीधे मार्ग पर लगा दें। उन्होंने जो कुछ किया उसके वे स्वयम् उत्तरदाता थे। महात्मा श्रीकृष्ण ने भी यदि कौरवों को समझाने या पाण्डवों की सहायता करने का प्रयत्न किया तो यह स्वयम् उनकी स्वाभाविक सहानुभूति थी। इसमें न तो ईश्वर के अवतार लेने की आवश्यकता थी और न उसको पैगम्बर भेजने की। महाभारत युग में किसी ने किसी को अवतार नहीं माना। न भीष्म पितामह ने, न युधिष्ठिर ने और उस के भाइयों ने और न दुर्योधन आदि विरोधियों ने। श्री कृष्ण को अवतार का रूप देने वाले तो महाभारत के बहुत समय के पश्चात् कुछ स्वार्थी मनुष्य हुए जो श्रीकृष्ण का नाम लेकर अज्ञानी लोगों को बहकाने और उनकी अज्ञानता से लाभ उठाते रहे। स्वामी दयानन्द को परमात्मा की ओर से भेजा हुआ रसूल मानने में स्वामी दयानन्द की महत्ता को बढ़ाना नहीं वरन् कम करना है। जितने लोगों ने पैगम्बरी का दावा किया है उन्होंने अपने को ईश्वर के हाथ का एक औजार बना रखा है। करता है ईश्वर परन्तु पैगम्बर के हाथ से करता है। आदेश ईश्वर देता है, परन्तु पैगम्बर के मुख से देता है। इससे पैगम्बर केवल ग्रामोफोन का काम देते हैं। वह किसी काम के लिए स्वयं उत्तरदाता नहीं हैं। स्वामी दयानन्द का ऐसा दावा नहीं है। वे न ईश्वर के अवतार हैं न पैगम्बर। केवल एक समाज सुधारक हैं, जो प्रकृति, नियम के अनुसार प्रेरणा पाकर मनुष्य को डिगने से बचाने का प्रयत्न करते हैं। उनके ऊपर कोई नवीन नियम नहीं उतरता और न कोई प्राचीन नियम मनसूख' होता है। ईश्वर के नियम में परिवर्तन की आवश्यकता नहीं। स्वामी दयानन्द के पास कोई दूत किसी स्वर्ग से सन्देश नहीं लाता। महर्षि दयानन्द की शिक्षा में किसी काल्पनिक अर्श, काल्पनिक स्वर्ग या काल्पनिक दूत' की आवश्यकता नहीं। वेद की सबसे प्राचीन शिक्षा और ईश्वर की प्राचीन सत्ता यह उसकी प्रेरणा के लिए पर्याप्त है। उन्होंने वही किया जो ऋषि महर्षि प्राचीन काल से करते आये हैं।

(साभार-गंगा ज्ञान सागर) भाग-१

स्वतंत्रता दिवस पर आर्य समाज बिजनौर के पदाधिकारियों एवं दयानन्द बाल विद्या मंदिर के शिक्षकों व विद्यार्थियों के द्वारा मनाया गया स्वतंत्रता दिवस

बंगलादेश में हो रहे अत्याचार के विरुद्ध आर्य समाज गाजीपुर ने दिया ज्ञापन

माननीय प्रधान मंत्री को सम्बोधित करते हुए आर्य समाज गाजीपुर द्वारा जिलाधिकारी गाजीपुर को ज्ञापन दिया गया। जिसमें बांग्लादेश में मुस्लिम मजहबी कट्टरपंथी लोगों द्वारा जो अत्याचार हिंदुओं पर किया जा रहा है। हम लोगों के लिए यह असहनीय व पीड़ादायक है। सोशल मीडिया के माध्यम से हमें जो देखने को मिला है। वह बहुत ही दर्दनाक है। हिंदू महिलाओं एवं बच्चों के साथ जो अमानवीय कृत्य एवं बलात्कार किया जा रहा है। उनके घरों को फूंक दिया जा रहा है। उनके व्यापार को नष्ट किया जा रहा है तथा उन्हें जान से मार दिया जा रहा है। ऐसी स्थिति में आर्य समाज गाजीपुर भारत सरकार से गंभीरता पूर्वक यह मांग करता है कि बांग्लादेश में रह रहे हिंदुओं की सुरक्षा हेतु वहां की सरकार पर पूर्ण दबाव बनाकर उन्हें पूर्ण सुरक्षा प्रदान कराया जाए या तो भारत में अवैध तरीके से रह रहे रोहंगियों और बांग्लादेशी मुस्लिम घुसपैठियों को चिन्हित कर उन्हें यहां से बांग्लादेश भेजते हुए और बांग्लादेश में रह रहे हिंदुओं को यहां लाकर बसाने का महत्वपूर्ण एवं अति संवेदनशील तथा भारत की मूल सनातन संस्कृति को बचाने का कार्य तत्काल करें।

महोदय, हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आपकी नेतृत्व वाली भारत सरकार बड़ी गंभीरता पूर्वक इस विषय पर विचार करते हुए त्वरित कार्यवाही करेगी।

द्वारा-दिलीप दिलीप कुमार वर्मा, प्रधान, आदित्य प्रकाश आर्य, प्रधान, जिता आर्य प्रतिनिधि सभा गाजीपुर, संतोष कुमार, जिला संचालन, सुरेन्द्रनाथ वर्मा, अध्यक्ष डी.ए.वी. इण्टर कालेज आदि।

वेद में योग विज्ञान

-परीक्षित मंडल प्रेमी
'विद्यामार्तण्ड'

योग साधना अध्यात्म प्रवण भारतवर्ष की प्राचीनतम पराविद्या है। वेद काल से लेकर आजतक इस पुण्यभूमि पर भारत ने कई जीवन मुक्त योगियों, संबुद्ध संतो, तपाचारियों और महर्षियों को उत्पन्न किया है. जिन्होंने समय-समय पर इस पवित्रतम योगविज्ञान पर प्रकाश डाला है। ईश्वर ने स्वयं अपने अमृत पुत्रों के परम कल्याणार्थ अपनी कल्याणी वेदवाणी द्वारा इस परम पवित्र योगविज्ञान का संकेत किया है-

युंजानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविता
थियः।
अग्ने ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्याऽ
अध्याभरत्।।
यजुर्वेद ११/१

(सविता तत्त्वाय) योगैश्वर्य का संवाहक मनुष्य तत्त्वज्ञान के लिए (प्रथमं मनः धिय युंजानः) पहले मन और धारणाओं-वृत्तियों को योगयुक्त करता हुआ योगाभ्यास में लगाता हुआ (अग्नेः ज्योति निचाय्य) प्रकाश स्वरूप ज्योति का निश्चय करके भली भाँति साक्षात् करके (पृथिव्या अधि आभरत्) पृथिवी से ऊपर अपने को ला खड़ा करता है. पृथिवी से ऊपर उठ जाता है अर्थात् पार्थिव भोग विलासों से आगे निकल जाता है।

योगैश्वर्य का अभिलाषी मानव उस परमतत्त्व परमेश्वर का साक्षात्कार करने के लिए पहले मन और बुद्धियों-वृत्तियों को योग साधनाओं में प्रवृत्त करता हुआ परमात्म-ज्योति का निश्चय करे, साक्षात् अनुभव करे। ऐसा करने पर वह पृथिवीस्थ पदार्थों से, पार्थिव भोग विलासों से ऊपर उठ जाता है।

जो तत्त्वबोध प्राप्त करना चाहता है, जो परमात्मा का साक्षात् अनुभव प्राप्त करना चाहता है. उसे चाहिए कि वह पहले अपने मन और उसमें उठने वाली वृत्तियों को योगाभ्यास की रीति से एकाग्र करे। उन्हें एकाग्र कर ब्रह्मज्योति के साक्षात्कार में लगा दे। शनैः शनैः जब वह अपने पूर्ण पुरुषार्थ और प्रभु की कृपा से उस ब्रह्मज्योति का अपने हृदय में साक्षात्कार कर लेगा, तब यह इतना ऊँचा उठ जाएगा कि फिर संसार में उसके लिए कोई भी पदार्थ आकर्षण का विषय नहीं रहेगा। तब यह कहा जा सकता है कि वह परमात्मा का ही हो जाएगा और परमात्मा भी उसी का हो जाएगा।

योग-साधना का क्षेत्र बहुत विराट् और व्यापक है। अन्नमयकोश से प्रारम्भ होकर आनन्दमयकोश में उसकी समाप्ति होती है। यह मनुष्य के संपूर्ण जीवन को स्वच्छ, सुन्दर, स्वस्थ और आध्यात्मिक ढंग से ऊर्ध्ववारोहण करने में सर्वथा सफल और सार्थक रहा है। ''साधना पथ में लिखा है कि इसकी सतत साधना से अन्तःकरण परिशुद्ध होता है और चित्तवृत्तियों का निरोध होकर सविकल्प या निर्विकल्प सुविचार या निर्विधार संप्रज्ञात या असंप्रज्ञात (सबीज या निर्वीज) समाधि की प्राप्ति होती है। इनमें से किसी भी एक अवस्था में साधक प्रारंभ में कुछ क्षणों के लिए तथा निरंतर अभ्यास के बाद लंबे समय तक अवस्थित रहता है। महर्षि पतंजलि ने कहा है ''योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः'' और ''तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम पर चलकर जीवात्मा उस परमपद अर्थात् निर्वाण को प्राप्त कर सकता है। जो भी हो, यह निर्विवाद सत्य है कि वेदकाल में योग साधना प्रचलित थी। वेदों में केवल योग शब्द के उल्लेख ही नहीं मिलते, बल्कि उसकी साधना प्रणाली तथा साधना करने वाले योगियों के अनेक स्थानों पर उल्लेख भी मिल जाते हैं। विश्व का आदि ग्रन्थ ऋग्वेद १/१८/७ की मनोहारिणी तथा मृदु-गंभीर ऋचा में स्पष्ट कहा गया है कि यस्मादृते न सिध्यति यज्ञो विपश्चितश्चन। स धीनां योगमिन्वति।। अर्थात् योग के बिना विद्वान का कोई भी यज्ञ-कर्म सिद्ध नहीं होता। पुनः ऋग्वेद १/५/३ तथा अथर्ववेद २०/६/१ में कहा गया है- स घा नो योग आ भुवत्स राये स पुरंध्याम्। गमत् वाजेगिरा स नः।।

अर्थात् वहीं परमात्मा हमारी समाधि के निमित्त अभिमुख हों, वही विवेक ख्यातिरूप धन तथा अतीतानागतादि अनन्त वस्तु विषयक होने से बहुविध बुद्धि ऋतम्भरा प्रज्ञा नामक प्रज्ञा के उत्पाद निमित्त अनुकूल हो, अर्थात् उसकी दया से समाधि विवेकख्याति तथा ऋतम्भरा प्रज्ञा का हमें लाभ हो और वही परमात्मा अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व आठ अलौकिक शक्तियों सहित हमारी ओर आगमन करे। इसी ऋग्वेद १/३०/७ में इन्द्र का आह्वान करते हुए कहा गया है-

योगे योगे तवस्तरं वाजे वाजे
हवामहे। सखाय इन्द्रमूतये।।

अर्थात् प्रत्येक योग में प्रत्येक संकट में और संग्राम में हम सखा इन्द्र का आह्वान करते हैं। पुनः भगवान स्वयं अपनी कल्याणमयी वेदवाणी द्वारा इस योग विद्या का उपदेश करते हैं-

युक्त्वाय सविता देवान्स्वर्यतो धिया
दिवम्।
बृहज्ज्योतिः करिष्यतः सविता
प्रसुवाति तानू।। यजुर्वेद ११!/३

(सविता धिया दिवं युक्याय) परमेश्वर बुद्धिप्रज्ञा और पुरुषार्थ से ज्ञानप्रकाश से युक्त होकर (स्वः यत् देवान) आनन्दोन्मुख एवं आत्म प्रकाशोन्मुख साधकों को प्रकृष्ट रूप से प्रेरित करता रहता है (सविता तानू बृहत् ज्योति करिष्यत प्रसुवाति) वह सबका जनक और सबका प्रेरक प्रभु साधना द्वारा अपने में महान ज्योति का साक्षात्कार चाहने वालों को प्रकृष्ट रूप से प्रेरणा देता है अर्थात् उसका उत्साह बढ़ाता है।

सविता बुद्धिपूर्वक ज्ञान-प्रकाश से युक्त होकर सुख विशेष की ओर अग्रसर होने वाले साधकों को खूब प्रेरित करता रहता है। इतना ही नहीं, वह सविता देव योग साधना द्वारा अनुपम ज्योति का साक्षात्कार चाहने वालों को खूब प्रेरणा देता है, उसका खूब उत्साह बढ़ाता है।

आज के जड़ताकांत भौतिकवादी हेतुवादी युग में त्रय-ताप संतप्त मानव जीवन में आरोग्य का, दुखदर्द में सुख आनन्द का, संकट में धैर्य का और अनिश्चय में निश्चय का मंगलमय स्वर झंकृत करने में योगविद्या का महत्व सर्वोपरि है। इसकी सतत साधना से जीवन का रोम-रोम मलकलुषित रहित हो जाता है तथा इसकी प्राणमय ऊर्जा से अवयव की मांस-पेशियाँ सुदृढ़ तथा ऊर्जस्वित हो जाती हैं और स्फीत शिराओं में स्वस्थ रूधिर का संचार होने लगता है। आधि-व्याधि से आक्रान्त हृदय-गगन और जर्जर शरीर शक्ति के तरल कणों से प्रदीप्तिमान हो उठता है। इसके अभाव में मावन के भीतर बेचैनी, तनाव, अनिश्चय, कुंठा, तुमुल कोलाहल, कलह, संत्रास, क्षोभ आदि का भीषण ज्यालामुखी धधकता रहता है। फलतः मानव की वर्तमान स्थिति अत्यन्त संघर्षशील है। इसी का दुष्परिणाम है कि अद्यावधि लाखों मानव मधुमेह, मोटापा, उच्चरक्तचाप, हृदयरोग, अस्थामा, डिप्रेशन, माइग्रेन, सर्वाइकल, आर्थराइटिस, साइटिकर, कमरदर्द, गैस, कब्ज, अम्लपित्त, अल्सर इत्यादि जटिल रोगों से शापित तथा तापित हैं। ऐसे जटिल रोगों से सतत योगाभ्यास, नियमित ध्यानाभ्यास एवं संतुलित सात्विक आहार से बहुत हद तक बचा जा सकता है। वर्तमान मानव समाज की शारीरिक पीड़ाओं की विविधता तथा मानसिक मर्म वेदना की बहुलता को विश्रांत करने का एकमात्र मधुमय सुखमय साधना योगविद्या ही है। इसके नियमित अभ्यास एवं अनुपालन से राजसिक एवं तामसिक वृत्तियाँ शक्तिहीन होकर सात्विक महाशक्ति से ऊर्जान्वित होने लगती है। योगर्षि स्वामी रामदेव के अनुसार अनुलोम-विलोम प्राणायाम से बहत्तर करोड़ बहत्तर लाख दस हजार दो सौ दस नाड़ियों परिशुद्ध हो जाती है। संपूर्ण नाड़ियों के शुद्ध होने से देह पूर्ण स्वस्थ कांतिमय एवं बलिष्ठ बनता है। असाध्य रोगों से पीड़ित व्यक्ति को 'अनुलोम-विलोम १५ मिनट से ३० मिनट तक नियमित करना चाहिए। इससे संधिवात, आमवात, गठिया, कम्पवात, स्नायु-दुर्बलता, आदि समस्त वातरोग, मूत्ररोग, धातुरोग, शुक्रक्षय, अम्लपित्त, शीतपित्त आदि समस्त पित्तरोग तथा सर्दी-जुकाम, पुराना नजला, साइनस, अस्थामा, ब्राकियल खाँसी, टॉन्सिलाइटिश आदि समस्त कफरोग दूर होते हैं। इससे त्रिदोष का प्रशमन होता है। आगे योगासन, नाडीशोधन, प्राणायामू ध्यान के माध्यम से चित्त में होने वाली नकारात्मक हलचलों को दूरकर सकारात्मक भावनाओं के प्रवाह को बढ़ाया जाता है''। इससे स्पष्ट होता है कि योग और ध्यान अपूर्व ऊर्जा के दिव्यतम केन्द्र हैं।

यद्यपि वेद और वेदोत्तर वाङ्मय में महर्षि हिरण्यगर्भ को इस योगविद्या का आदि आचार्य माना जाता है, तथापि इस समय उपलब्ध ग्रन्थों में केवल महर्षि पतंजलि का १६५ योग सूत्र ही ऐसा प्रामाणिक शास्त्र है. जिसमें कियत् विस्तार से इस परम पावन योगविद्या का वर्णन है। पाणिनि के धातुपाठ में योग पद युजू समाधौ, युर्जियोगे तथा 'युजू संयमने धातु में 'घं' प्रत्यय लगकर सिद्ध होता है। महोजि दीक्षित ने समाधि का अर्थ चित्तवृत्ति का निरोधा बताया है- समाविश्चित्तवृत्तिनिरोधः । महर्षि वेद व्यास ने भी कहा है- 'योगः समाधिः' और 'युर्जियोगे के अनुसार योग जोड़ने के अर्थ में प्रयुक्त होने वाला शब्द है। महर्षि संतसेवी परमहंस ने ''चित्तवृत्ति निरोधः'' जोड़ने एवं एकाग्रता के अर्थ में ही 'योग' शब्द को ग्रहण किया है। डा. बी. जी. रेले ने ''द मिस्टिरियस कुण्डलिनी'' में योग को मनुष्य के भीतर के देवत्व के साथ मनुष्य के मिलन का विज्ञान माना है। इसकी साधना से मनुष्य के भीतर एक ऐसा नया मानव आविर्भूत होता है, जो अपनी क्षमताओं के कारण उच्च स्फूरणों के अनुकूल होता हुआ साध्य के साथ तादात्म्य, ग्रहण कर लेता है। एफ० ब्राउन ने 'योग एक्सप्लेण्ड' में योग शब्द को अंग्रेजी में YOKE शब्द के सदृश माना है। इसके अनुशासन या नियंत्रण से संपूर्ण मानव शक्तियों का उन्नयन, विकास एवं जीवन की यथार्थता का बोध होता है। इस प्रकार योग से मनुष्य के भीतर की अनन्त क्षमताओं का इतना व्यापक विकास होता है कि वह सिद्धि के आह्लाद और साधना मार्ग के कष्टों को आसानी से सह लेता है।

मो.९१६२२०८००५

बंगलादेश में हो रहीं निर्मम हत्याओं के विरोध में महिला आर्य समाज हापुड़ द्वारा दिया गया ज्ञापन

महिला आर्य समाज हापुड़ द्वारा महामहिम आदरणीया राष्ट्रपति महोदया को संबोधित करते हुए जिलाधिकारी के माध्यम से ज्ञापन दिया गया। समूचा विश्व बांग्लादेश में हो रही अमानवीय हिंसा से अवगत है, लेकिन वहाँ हो रही हिंसा अब हिन्दू विरोधी हो चुकी है, जिस कारण वहाँ हिन्दूओं की महिलाओं, पुरुषों व बच्चों की निर्मम हत्या हो रही है, हिन्दूओ के व्यापारिक स्थलों व धार्मिक स्थलों में लूट-पाट व आगजनी की जा रही है, हिन्दूओं के घरों में घुसकर माता-बहनों व छोट-छोटे बच्चों के साथ अत्याचार किया जा रहा है, जोकि बहुत निदनीय व दर्दनाक घटना है, जिसे अब समूचा हिन्दू समाज सहन नहीं कर पा रहा है। हम हिन्दूओं के परिवार की महिलाये व बच्चे इस घटना को देखकर आक्रोशित है।

महोदया, बहुत दुःख का कारण है कि पूरे विश्व में कोई भी देश हिन्दुओं की हो रही निर्मम हत्याओं, लूटपाट पर, धार्मिक स्थलों व व्यापारिक स्थलों पर तोडफोड के खिलाफ आवाज उठाने से परहेज कर रहा है।

महोदया, अब वहाँ अन्तरिम सरकार का गठन हो चुका है अतः आप भारत सरकार को आदेशित करें कि तत्काल प्रभाव से उस सरकार से वार्ताकर या अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दूओं के साथ हो रहे अत्याचारों पर अपना विरोध दर्ज कराकर, पूर्ण विराम लगाने व ओरोपियों के विरूद्ध सख्त से सख्त कानूनी कार्यवाही कराने के लिए बांग्लादेश की सरकार को बाध्य करना चाहिए व भारतवर्ष की पुण्य भूमि को अवैध रोहिगीया मुस्लमानों से मुक्त कर देना चाहिये।

आदरणीय महामहिम महिला आर्य समाज, हापुड़ आपसे निवेदन करती है। है कि समय रहते हिन्दूओं के साथ हो रहे अत्याचारों को रोकने के लिए ठोस उचित कदम अतिशीघ्र उठाये जायें ।

द्वारा-वीना आर्या, प्रधाना, प्रतिभा भूषण-मंत्री, रेखा गोयल-कोषाध्यक्ष आदि।

स्वामी भद्राचार्य जी का अनर्गल प्रलाप

-डा० विवेक आर्य

स्वामी भद्राचार्य जी का एक वीडियो प्रचारित हो रहा हैं। भद्राचार्य जी ने स्वामी दयानन्द जी पर अनावश्यक टिप्पणी करते हुए कहा कि स्वामी जी ने रामायण और महाभारत को काल्पनिक बताया हैं। भद्राचार्य जी का कहना है कि श्री राम और श्री कृष्ण जी का वेदों में वर्णन हैं।

भद्राचार्य जी ने यह टिप्पणी कर अपनी अज्ञानता का परिचय दिया है। उनकी भ्रान्ति का निवारण आवश्यक है। राम और कृष्ण मानवीय संस्कृति के आदर्श पुरुष हैं। कुछ बंधुओं के मन में अभी भी यह धारणा है कि महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज राम और कृष्ण को मान्यता नहीं देता है। प्रत्येक आर्य अपनी दाहिनी भुजा ऊँची उठाकर साहसपूर्वक यह घोषणा करता है कि आर्यसमाज राम-कृष्ण को जितना जानता और मानता है, उतना संसार का कोई भी आस्तिक नहीं मानता। कुछ लोग जितना जानते हैं, उतना मानते नहीं और कुछ विवेकी-बंधु उन्हें भली प्रकार जानते भी हैं, उतना ही मानते हैं।

१. मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के संबंध में स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश लिखा है,

''प्रश्न-रामेश्वर को रामचन्द्र ने स्थापित किया है। जो मूर्तिपूजा वेद-विरुद्ध होती तो रामचन्द्र मूर्ति स्थापना क्यों करते और वाल्मीकि जी रामायण में क्यों लिखते?

उत्तर- रामचन्द्र के समय में उस मन्दिर का नाम निशान भी न था किन्तु यह ठीक है कि दक्षिण देशस्थ 'राम' नामक राजा ने मंदिर बनवा, का नाम 'रामेश्वर' धर दिया है। जब रामचन्द्र सीताजी को ले हनुमान आदि के साथ लंका से चले, आकाश मार्ग में विमान पर बैठ अयोध्या को आते थे, तब सीताजी से कहा है कि-

अत्र पूर्वं महादेवः
प्रसादमकरोद्विभुः।
सेतु बंध इति विख्यातम्।।

वा० रा०, लंका काण्ड (देखिये- युद्ध काण्ड़, सर्ग १२३, श्लोक २०-२१)

'हे सीते! तेरे वियोग से हम व्याकुल होकर घूमते थे और इसी स्थान में चातुर्मास किया था और परमेश्वर की उपासना-ध्यान भी करते थे। वही जो सर्वत्र विभु (व्यापक) देवों का देव महादेव परमात्मा है, उसकी कृपा से हमको सब सामग्री यह, प्राप्त हुई। और देख! यह सेतु हमने बांधकर लंका में आ के, उस रावण को मार, तुझको ले आये। इसके सिवाय वह, वाल्मीकि ने अन्य कुछ भी नहीं लिखा।

(द्रष्टव्य- सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लासः पृष्ठ-३०३)

इस प्रकार उक्त उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि भगवान राम स्वयं परमात्मा के परमभक्त थे। उन्होंने ही रामसेतु बनवाया था।

२. स्वामी दयानन्द रामायण और महाभारत को काल्पनिक मानते तो सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय सम्मुलास में पठन-पाठन विषय के अंतर्गत स्वामी जी वाल्मीकि रामायण और महाभारत के पढ़ने का विधान नहीं करते।

स्वामी दयानन्द लिखते है,

'' तत्पश्चात मनुस्मृति, वाल्मीकि रामायण और महाभारत के उद्योगपर्व अंतर्गत विदुरनीति आदि अच्छे प्रकरण जिनसे दुष्ट व्यसन दूर हों और उत्तम सभ्यतागति हो, वैसे काव्यरीति अर्थात पदच्छेद, पदार्थोक्ति, अन्वय, विशेष्य, विशेषण और भावार्थ को अध्यापक लोग जनावें और विद्यार्थी लोग जानते जायें।'' इससे स्पष्ट प्रमाण नहीं मिल सकता।

३. स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज श्री कृष्ण जी को योगिराज के रूप में सम्मान देता हैं। स्वामी दयानंद जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में श्री कृष्ण जी महाराज के बारे में लिखते हैं,

''पूरे महाभारत में श्री कृष्ण के चरित्र में कोई दोष नहीं मिलता एवं उन्हें आप्त (श्रेष्ठ) पुरुष कहा है। स्वामी दयानंद श्री कृष्ण जी को महान् विद्वान् सदाचारी, कुशल राजनीतिज्ञ एवं सर्वथा निष्कलंक मानते हैं फिर श्री कृष्ण जी के विषय में चोर, गोपिओं का जार (रमण करने वाला), कुब्जा से सम्भोग करने वाला, रणछोड़ आदि प्रसिद्ध करना उनका अपमान नहीं तो क्या है?''

बोलो योगिराज श्री कृष्ण जी की जय।

४. स्वामी दयानन्द के पूना प्रवचन में इक्ष्वाकु से लेकर महाभारत पर्यन्त इतिहास पर विस्तार से चर्चा की हैं। अगर स्वामी जी रामायण और महाभारत को काल्पनिक मानते तो इनकी चर्चा क्यों करते?

५. रामभद्राचार्य जी वेद मन्त्रों में श्री राम जी का वर्णन बता रहे हैं। स्वामी दयानन्द वेदों को इतिहास की पुस्तक नहीं मानते क्यूंकि वेदों का ज्ञान सृष्टि के आदि में प्रकट हुआ हैं। ऐसे में उनमें इतिहास कहाँ से वर्णित होगा।

स्वामी दयानन्द इस विषय पर सत्यार्थ प्रकाश में लिखते है,

''इतिहास जिसका हो, उसके जन्म के पश्चात् लिखा जाता है। वह ग्रन्थ भी उसके जन्म के पश्चात् होता है। वेदों में किसी का इतिहास नहीं। किन्तु जिस-जिस शब्द से विद्या का बोध होवे, उस-उस शब्द का प्रयोग किया है। किसी विशेष मनुष्य की संज्ञा या विशेष कथा का प्रसंग वेदों में नहीं है।''

६. क्या वेदों में रामायण के श्रीराम-सीता का वर्णन है ?

वेदों में राम, कृष्ण आदि शब्दों के नाम पर ही नामकरण हुए हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि वेदों में श्री राम और श्री कृष्ण जी आदि का वर्णन हैं।

ऋग्वेद २/२/८ में आये राम्याः का अर्थ स्वामी दयानन्द ने रात्रि किया है। ऋग्वेद ६/६५/१ में आये राम्यासु का अर्थ स्वामी दयानन्द ने रात्रि किया है। ऋग्वेद ३/३४/१२ में आये रामीः का अर्थ स्वामी दयानन्द ने आराम की देने वाली रात्रि किया है। ऋग्वेद १०/३/३ में आये राम शब्द का सायण ने अर्थ कृष्ण रंग वाला किया है। इस प्रकार से राम शब्द के अर्थ वेदों में काले रंग, अन्धकार और रात्रि के रूप में हुए हैं। इनसे रामायण के पात्र श्रीराम किसी भी प्रकार से सिद्ध नहीं होते। वैद्यनाथ शास्त्री और अमर सिंह जी निरुक्त १२/१३ का उद्धरण देकर राम शब्द से काला ग्रहण करते हैं।

अथर्ववेद १३/३/२६६८ में अर्जुन को द्रौपदी (कृष्ण) का पुत्र बताया गया है। वेदों में इतिहास मानने वाले क्या यह स्वीकार कर सकते हैं कि अर्जुन द्रौपदी का पुत्र था? नहीं। स्वामी विद्यानन्द शतपथ ब्राह्मण ६/२/३/३० का प्रमाण देते हुए लिखते हैं कि यहाँ कृष्ण अर्थ रात्रि का है एवं रात्रि से उत्पन्न होने आदित्य अथवा दिन (अर्जुन) उसका पुत्र है ।इस प्रकार से यहाँ इतिहास वर्णन नहीं है ।

७. क्या वेदों में श्री कृष्ण-राधा, अर्जुन आदि महाभारत के पात्रों का वर्णन है ?

वेदों में कृष्ण-राधा शब्द अनेक मन्त्रों में आया है। वेदों में इतिहास मानने वाले प्रायः कृष्ण शब्द से महाभारत के श्री कृष्ण जी का वेदों में वर्णन दर्शाने का प्रयास करते हैं। राधा का वर्णन महाभारत में नहीं मिलता। वेदों में कृष्ण शब्द का अर्थ काला रंग, आकर्षक, काला दिन, काला बादल आदि हैं ।

स्वामी दयानन्द भाष्य अनुसार ऋग्वेद १/५८/४ में कर्षणरूप गुण, ऋग्वेद १/७३/७ और ऋग्वेद १/६२/५ में काला रंग, ऋग्वेद १/१०१/४ में विद्वान्, ऋग्वेद १/११५/४ में काले-काले अन्धकार, ऋग्वेद १/१६४/४७ में खींचने योग्य, ऋग्वेद ६/६/१ में रात्रि, ऋग्वेद ७/३/२ में आकर्षण करने योग्य, यजुर्वेद २१/५२ में भौतिक अग्नि से छिन्न अर्थात् सूक्ष्मरूप और पवन के गुणों से आकर्षण को प्राप्त, यजुर्वेद २४/३० में काला हरिण, यजुर्वेद २४/४० में काले रंग वाला, यजुर्वेद २६/५८ में काले गरने वाला पशु, यजुर्वेद २६/५६ में काला बकरा, यजुर्वेद ३०/२१ में काले रंग वाले आदि अर्थ किया है।

ऋग्वेद ३/५१/१० में राधा पद आता है जिससे कुछ लोगों में राधा का वर्णन मानते हैं। स्वामी दयानन्द ने राधा का अर्थ धन किया है। ऋग्वेद १/२२/७ में आये राधम का अर्थ स्वामी दयानन्द ने विद्या सुवर्ण वा चक्रवर्ती राज्य आदि धन के यथायोग्य किया है।

ऋग्वेद ६/६/१ में आये कृष्ण और अर्जुन का अर्थ स्वामी दयानन्द रात्रि और सरलगमन आदि गुण क्रमशः करते हैं। यजुर्वेद २३/१८ में आये अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका का अर्थ स्वामी दयानन्द माता, दादी और परदादी करते हैं।

८. वेदों में इतिहास होने की मान्यता अज्ञानता का बोधक है।

अथर्ववेद ३/१७/८ में आया है कि जिस प्रकार से ईश्वर ने इस कल्प में सृष्टि की रचना की है, वैसे ही पूर्व कल्प में की थी और आगे भी करेगा। कल्प के आरम्भ में ईश्वर वेदों का ज्ञान प्रदान करता है। इसलिए हर कल्प के आरम्भ में भी वैसे ही करेंगे जैसे करते आये हैं जो लोग वेदों में श्रीराम, कृष्ण आदि का इतिहास मानते हैं। क्या वे यह भी मानेंगे की हर सृष्टि के हर कल्प में श्रीराम को वनवास का कष्ट भोगना पड़ा? क्या हर कल्प में सीता हरण हुआ ? क्या हर कल्प में कृष्ण को कारागार में जन्म लेना पड़ा? क्या हर कल्प में यादव कुल का नाश हुआ ? नहीं ऐसा कदापि सम्भव नहीं है। ईश्वर द्वारा सभी सांसारिक वस्तुओं के नाम वेद से लेकर रखे गए हैं, न कि इन नाम वाले व्यक्तियों या वस्तुओं के बाद वेदों की रचना हुई है। जैसे किसी पुस्तक में यदि इन पंक्तियों के लेखक का नाम आता है तो वह इस लेखक के बाद की पुस्तक होगी। इस विषय में मनुस्मृति १/२१ में आया है कि ब्रह्मा ने सब शरीरधारी जीवों के नाम तथा अन्य पदार्थों के गुण, कर्म, स्वभाव नामों सहित वेद के अनुसार ही सृष्टि के प्रारम्भ में रखे और प्रसिद्ध किये और उनके निवासार्थ पृथक्-पृथक् अधिष्ठान भी निर्मित किये।

इन प्रमाणों से रामभद्राचार्य जी का विचार असत्य सिद्ध होता हैं। इस पर भी उन्हें शंका है तो आर्यसमाज के द्वार इस विषय पर शास्त्रार्थ के लिए खुले हैं।

मृत्युञ्जय मन्त्र के विषय में भ्रान्ति

-डा० सुशील वर्मा

महर्षि दयानन्द जी की दृष्टि में व्यष्टि और समष्टि के हित में किये जाने वाले सभी परोपकारपूर्ण कृत्य यज्ञ है। यज्ञ, हवन अथवा अग्निहोत्र का ही पर्याय नहीं है अपितु हमारे व्यक्तिगत तथा सामाजिक अभ्युत्थान हेतु किए जाने वाले लोकहित कर्मो की समष्टि है। यहाँ तक कि इनके द्वारा हम मृत्यु के पार के जीवन को भी उच्चतर बनाते हैं। यह भी सत्य है कि आर्य समाजों में पौराणिक भाईयों द्वारा स्वामी जी की विचारधारा को अपने अनुसार चलाने व ढालने के समय समय पर प्रयत्न किये जाते रहे हैं और आज भी इस प्रयत्न में कोई कमी नहीं आई है अपितु हमारे पुरोहित वर्ग भी उनका साथ अपने स्वार्थ सिद्धि के अनुकूल दे रहे हैं। यज्ञ करते समय कलावा बान्धना यज्ञ की समाप्ति के पश्चात यजमानों एवं उपस्थित सज्जनों को आशीर्वाद देते हुए दक्षिणा ली जाती है। बहुत से मन्त्रों का विनियोग अपनी ओर से करके पौराणिक परम्पराओं को बढ़ावा दे रहे हैं।

बहुत से मन्त्रों का प्रयोग अपनी सुविधानुसार प्रयोग किये जा रहे हैं उदाहरण के तौर पर स्वामी जी ने यज्ञ के पश्चात कहीं भी ''पूर्णमदः पूर्णमिदं-त्र्यम्बकं यजामहे'' आदि मन्त्र का प्रयोग नहीं किया है। बहुत बार तो त्र्यम्कं मन्त्र (जिसे वे महामृत्युंजय मन्त्र कहते हैं) को पांच, सात, ग्यारह अथवा तो उससे भी अधिक आहुतियाँ दिलाई जाती हैं। हैरानी की बात है कि इस मन्त्र को पौराणिक भाई तो सबसे उच्च मानते हैं और मृत्यु से छुटकारा अथवा तो स्वस्थ रहने के लिए इसका अनुष्ठान भी करते हैं। जबकि स्वामी जी ने इस मन्त्र का कहीं भी किसी भी प्रयोजन के लिए प्रयोग नहीं किया हैं। इससे भी अधिक बिडम्बना है कि यह मन्त्र यजुर्वेद के तृतीय अध्याय का ६०वाँ मन्त्र है जो कि वास्तव में आज के समाजों में प्रयोग किए जाने वाले मन्त्रों में दोगुणा है अर्थात् हम तो आधा ही मन्त्र प्रयोग कर रहे हैं। मन्त्र इस प्रकार से है।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्
उर्वारुकमिव बन्धानान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्
उर्वारुकमिव बन्धानादितो मुक्षीय मामुतः।। यजु.३/६०
ऋषिः- वसिष्ठ। देवता - रुद्रः । छन्दः विराड्ब्रह्मी त्रिस्टुप।

वेद संहिता का यह मन्त्र आधा ही प्रयोग करते हैं और दूसरे के बारे में उनका यह तर्क है कि यह तो पत्नी के प्रयोग के लिए है। और इसका विनियोग कुछ लोगों द्वारा विवाह संस्कार के समय अन्य मन्त्रों के साथ किया जाता है। यह एक अनर्थक विनियोग है। पौरोणिक पद्धति में तो ऐसे कई अनर्थक विनियोग प्राप्य है। जबकि स्वामी जी ने सार्थक विनियोग उपयुक्त कर एक नई दिशा दी। जिसे 'रूप समृद्धि' नाम से जाना जाता है।

इस मन्त्र का भाष्य इस प्रकार से है--

त्र्यम्बकं - ऋग्यजुः साम मन्त्रों के द्वारा ज्ञान कर्म व भक्ति का उपदेश देने वाले प्रभु का यजामहे-हम पूजन करते हैं। अथवा प्रभु को अपने साथ संगत करते हैं। वस्तुतः सुगन्धिम्-वे प्रभु ही हमारे साथ उत्तम गन्ध सम्बन्ध वाले हैं। संसार के सब व्यक्तियों के सम्बन्ध में कुछ स्वार्थ है प्रभु का सम्बन्ध स्वार्थ के लेश से भी शून्य है। जितना प्रभु के साथ हमारा सम्बन्ध बढ़ता है उतना उतना ये भी पुष्टिवर्धनम्=हमारी पुष्टि का वर्धन करने वाले हैं। प्रभु से प्रार्थना है कि कि मैं उस प्रभु के सम्पर्क से पुष्टि को प्राप्त होता हुआ पूर्णतः परिपक्व होकर मृत्यो=इस मरणधर्मा शरीर से मुक्षीय=इस प्रकार मुक्त हो जाऊं इव=जैसे पूर्ण परिपक्व उर्वारुकम्=खरबूजा बन्धनात्=बन्धन से मुक्त हो जाता है। जैसे कोई परिपक्व फल शाखा से अलग हो जाता है उसी प्रकार मैं पूर्ण पुष्टि को प्राप्त हुआ, मृत्यु से दूर हो जाऊँ और अमरता को प्राप्त होऊँ। मा आमृतात् = मैं मोक्ष से छूटने वाला न हाऊँ। पुनः दोहराता हूँ।

त्र्यम्बकं = ज्ञान कर्म व भक्ति के उपदेष्टा प्रभु की यजामहे= हम उपासना करते हैं। वे प्रभु सुगन्धिम् = हमारे उत्कृष्ट सम्बन्ध वाले हैं। ये प्रभु ही पतिवेदनम् = मुझे सच्चे पति-रक्षक को प्राप्त करने वाले हैं। ये प्रभु ही मेरे सच्चे पति हैं। जीवात्मा पत्नी है, प्रभु पति है। कन्या भी पूर्वगृह को छोड़कर पतिगृह को प्राप्त करती है। जैसे एक कन्या बन्धनात् = नाना प्रकार के आकर्षणों व बन्धनों से शान्ति से जाती है। अब जैसे कि उर्वारुकं बन्धनात्-एक परिपक्व फल शाखा-बन्धन से अलग हो जाता है इसी प्रकार मैं इतः संसार बन्धन से मुक्षीय =छूट जाऊँ। मा अमुतः = इस संसार से परे उस प्रभु के सम्बन्ध में मैं कभी पृथक न होऊँ। (पं० हरिशरण सिद्धान्तालंकार)

इस प्रकार साधकों को सुगन्धयुक्त प्रभु का अर्थात् अपने शुभ, दिव्य कार्यों की सुगन्ध से साधकों के सिद्ध अत्यन्त आकर्षक का जब उस प्रभु को बोध होता है-जब यह अनुभव होता है कि वास्तव में उनका पति रक्षक स्वामी वही है वो श्रद्धा भक्ति में उसका पूजन करते हें, समाहित होकर ध्यान करते हैं तब वह सहज ही उन्हें डण्ठल से पके हुए खरबूजे की नाईं मृत्युलोक बन्धन से मुक्त कर देता है, पर उसे उस अमरलोक से नहीं, क्योंकि उससे तो वह उन्हें जोड़ता है।

सारांश यह कि हमें वेद संहिता के मन्त्र का पूर्णतः उच्चारण करना चाहिए न कि मन्त्रांश का तभी हम इस मन्त्र के वास्तविक अर्थ को समझ पायेंगे और उस प्रभु को अपना पति रक्षक स्वामी मानकर उसकी स्तुति कर सकते हैं, उसकी अनुभूति का आनन्द ले सकते हैं। लोगों में भ्रम फैलाया गया कि मन्त्र का प्रथम भाग हमें मृत्यु से बचा लेगा। (न जाने कितने अनुष्ठान किए जाते हैं और इसी नाम पर लोगों को लूटा जाता है) और दूसरे भाग को केवल विवाह में असार्थक विनियोग कर पत्नी द्वारा पति के प्रति निष्ठा बताई जाती है। जब कि वास्तव में वह प्रभु ही हमारा पति है, रक्षक है, स्वामी है, उसी की उपासना से उसके प्रति आस्था प्रकट कर अमरता की प्रार्थना कर सकते हैं। इस लिए निवेदन है कि हमारी पुस्तकों में, जहां कहीं आधा अधूरा मन्त्र ही उच्चारण के लिए प्रकाशित किया जाता है वह मन्त्र की भावना को पूर्ण रूपेण दर्शाता नहीं है अपितु पूरा मन्त्र ही हमें उस सच्चे परमप्रभु को अपना पति-रक्षक, मालिक, स्वामी मान कर हमें अमरतत्व को प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक होगा।

मो. ७००६८२२७२०

जिला अधिकारी के माध्यम से भारत सरकार को ज्ञापन

बरेली में भी आर्य प्रतिनिधि सभा ने जिला अधिकारी के माध्यम से भारत सरकार को ज्ञापन भेजा है जिसमें बांग्लादेश के हिंदुओं की सुरक्षा की पहल कराए जाने की मांग की है।

शिव संकल्पों के साथ वेद कथा का समापन

आर्य समाज बिल्सी, गुधनी के तत्वावधान में स्थानीय प्रज्ञा यज्ञ मंदिर में चल रही सात दिवसीय वेद कथा का शिव संकल्पों के साथ समापन हो गया । वेद कथाकार अंतरराष्ट्रीय वैदिक विद्वान आचार्य संजीव रूप ने कथा सुनाने के पश्चात सभी को शुभ संकल्प कराए उन्होंने कहा सुनना ही सत्संग नहीं है गुनना सत्संग है । यदि कोई हमें सन्मार्ग दिखाएं तो उस पर चलना सत्संग है ! यदि कोई हमें बुराई से खबरदार करें कि बीड़ी सिगरेट शराब पीना बुरी बात है इससे सेहत खराब होती है तो विचार करके उन्हें छोड़ देना और जीवन में फिर कभी ना अपना ना ही सत्संग है ! 'माता-पिता की सेवा करना बुजुर्गों का मान करना, परोपकार करते हुए नेकी के रास्ते पर चलना ही सत्संग है। आचार्य संजीव रूप ने कहा जिस कार्य को करने में आत्मा में उत्साह पैदा ना हो निर्भयता पैदा ना हो किंतु डर लगे तो समझना वह काम गलत है भगवान मना कर रहा है , भगवान की बात मानना ही सत्संग है ! इससे पूर्व मास्टर रामसेवक, प्रश्रय आर्य, कुमारी तृप्ति आर्य, ईशा आर्य ने भजन सुनाए। कार्यक्रम में श्रीमती शशि आर्यश्रीमती छाया रानी, श्रीमती मंजू रानी, किशनपाल आर्य, राकेश आर्य,आनंदपाल, मास्टर साहब सिंह,विनीत कुमार सिंह, बद्री प्रसाद आर्य, अशोक पाल सिंह, गोपाल उपाध्याय आदि मौजूद रहे।

शराब बन्दी हेतु ज्ञापन

दिनांक ०८.०८.२०२४ को जिला आर्य प्रतिनिधि सभा अमरोहा के तत्वाधान में जिलाधिकारी अमरोहा के माध्यम से माननीय प्रधानमंत्री भारत सरकार तथा माननीय मुख्यमंत्री यूपी को अपराधो की जननी शराबबंदी हेतु ज्ञापन दिया गया। शराबबंदी के अतिरिक्त मनुस्मृति के अनुसार सभी को समान शिक्षा व्यवस्था , चतुर्थ श्रेणी भर्ती तथा संस्थाओं का निजीकरण न करने की मांग की गई। ज्ञापन देने वालों में जनपद के विभिन्न छेत्रो से पधारे श्री धर्मवीर सिंह,विनय त्यागी, रोहिताश सिंह,सुभाष दुआ, हेतराम सागर, प्रवीण आर्य, नत्थू सिंह आर्य,नरेंद्र कांत गर्ग, शीलचंद, सुरेंद्र सिंह, डा. जगत सिंह, प्रदीप आर्य, विनय प्रकाश आर्य, हरिपाल सिंह, अभय आर्य, डा. कोशेंद्र सिंह, ठाकुर सिंह, वीर सिंह प्रधान, अनिल जग्गा, हरिसिंह तथा कल्याण सिंह आदि रहे।

पंजी०सं० आर.एन.आई.-२२४१/५७ -आर्यमित्र आर्यमित्र आर्यमित्र १५ अगस्त, २०२४ पोस्टल रजि.जी.पी.ओ. लखनऊ/एन.पी.-१४/२०१६-२१ एक प्रति ₹ ५.००

आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०९४१२६७८५७१, मंत्री-०९४१५३६५५७६, सम्पादक-९४५१८८१९७७
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा प्रयागराज के तत्वाधान में महायज्ञ

आर्य समाज चौक प्रयागराज महर्षि दयानंद सरस्वती जी की २००वीं जयंती के उपलक्ष में महायज्ञ संपन्न हुआ। मुख्य यजमान- श्री पंकज जायसवाल-मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, विशेष यजमान- श्री शैलेंद्र जी पूर्व सांसद प्रधान जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, कार्यक्रम का संचालन कर रहे थे। रवि शंकर पांडे एवं पदाधिकारी रविंद्र जायसवाल सतगुरु, राकेश केसरी, गुलाबचंद केसरवानी, पी.एन. मिश्रा, श्रीमती संध्या आर्या, श्री उमाशंकर शास्त्री, ओम प्रकाश सेठ, यग नारायण, विजय जायसवाल, जगत बहादुर सिंह, राधेश्याम आर्य, शिवम त्रिपाठी, शैलेंद्र कुमार सिंह, ऐ. के. सिंह, श्याम जी गुप्ता एवं आर्य बंधु के द्वारा हवन संपन्न हुआ।

बंगलादेश के हिन्दू उत्पीड़न के विरोध में ज्ञापन

दिनांक १२ - ०८ -२०२४ को आर्य समाज चौक प्रतापगढ़ के बैनर तले प्रधान श्री राम कृपाल आर्य जी के नेतृत्व मे बांग्लादेश में हिन्दू उत्पीड़न के विरोध मे ज्ञापन देने हेतु सेकैड़ो की संख्या मे एक रैली निकालकर चौक बजाजा होते हुए कलेक्टरी आफिस में आर्य समाज के पदाधिकारियों द्वारा डी.एम. साहब को ज्ञापन सौंपा गया। सहयोगी- अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मण्डल, नगर प्रतापगढ़ भी रहे कार्यक्रम मे प्रधान रामकृपाल कसौधन के नेतृत्व में उपप्रधान रामेश्वर जी, मंत्री डॉ. सत्य प्रकाश, कोषाध्यक्ष राजेश खण्डेलवाल, उपमंत्री कृष्णा पटवा, पुस्तकालय अध्यक्ष विनय सिंह, आर्यवीर दल अधिष्ठाता ओम प्रकाश, अंतरंग सदस्य-गोपाल केसरवानी, जवाहरलाल (बच्चा), अभिषेक बरनवाल, अतुल गुप्ता व अन्य विजय गुप्ता, हरिकान्त, सत्य प्रकाश कसौधन, बृजेश केसरवानी, संदीप गुप्ता, जय प्रकाश कसौधन, सत्य प्रकाश गुप्ता (बच्चा), अमित केसरवानी, राकेश केसरवानी, अथर्व कसौधन, आकाश सरोज, महावीर व अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मंगल की नगर इकाई के नगर अध्यक्ष अर्पित खण्डेलवाल, श्रवण माकीजा, राहुल खत्री, राहुल गुप्ता, मनोज केसरवानी व सैकड़ों की संख्या में मौजूद रहे।

बंगलादेश की दिवंगत आत्माओं हेतु शांति यज्ञ

आर्य समाज सीतापुर में, बंगला देश में वहीं के कट्टरपंथी बहुसंख्यकों द्वारा अल्पसंख्यक हिन्दुओं पर किये जा रहे बर्बरतापूर्ण अत्याचार एवं निर्मम हत्याओं के विरोध में व मृतकों की आत्माओं की शांति के लिए, यज्ञ किया गया। यज्ञ के पश्चात् बंगाल के बहुसंख्यकों द्वारा की जा रही इस बहुत ही घृणित व क्रूर कायरतापूर्ण कृत्य की कठोर शब्दों में निन्दा की गयी। भारत सरकार से इस सन्दर्भ में अविलम्ब अत्यन्त कठोर कदम उठाने की माँग की गयी। चौधरी रणवीर सिंह, प्रधान ने यज्ञ पश्चात् अपने सम्बोधन में कहा।

बांग्लादेश में हिन्दुओं पर होते अत्याचार के खिलाफ कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन, पीएम के नाम दिया ज्ञापन

केंद्रीय आर्य समिति मेरठ महानगर और जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा मेरठ के संयुक्त तत्वावधान में बांग्लादेश में हुए तख्तापलट के बाद से हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार, हत्या, लूटपाट, व्यापारिक प्रतिष्ठानों को लूटने और आग के हवाले करना, हत्या करना, बच्चियों और महिलाओं से बलात्कार करके हत्या करना और सामूहिक धर्मांतरण, हिन्दू मंदिरों में तोड़फोड़ करने के विरोध में कलेक्ट्रेट पर जमकर विरोध प्रदर्शन किया। जहां उन्होंने जिलाधिकारी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम एक ज्ञापन देकर बांग्लादेश में हो रहे राजनीतिक घटनाक्रम के कारण वहां के हिंदुओं की सुरक्षा की व्यवस्था किए जाने की मांग उठाई। उन्होंने कहा कि हिन्दु शरणार्थी भारत में प्रवेश करना चाहें उन्हें भारत आने की अनुमति देनी चाहिए। इस दौरान बडी संख्या में आर्य समाज के लोग शामिल रहे। प्रदर्शन में केंद्रीय आर्य समिति के प्रधान सत्यपाल मेहंदीरत्ता, मंत्री रविंद्र सिंह, ड,क्टर आर पी सिंह चौधरी, अशोक सुधाकर, राजेश सेठी, हरवीर सुमन, शरद सुधाकर, मनीष शर्मा, स्वामी आर्य, नंदिनी, स्नेहा, कोमल, निधि शर्मा, निधि, पंकज, नीलम, आरती आदि अन्य लोग उपस्थित रहे।

भारत सरकार बांग्लादेश के हिंदुओं की रक्षा कराये : आर्य प्रतिनिधि सभा

एस.डी.एम. मिलक को दिया गया ज्ञापन

मिलक रामपुर से तहसील आर्य सभा मिलक के तत्वाधान में आज एक वृहद कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें बांग्लादेश के हिंदुओं के साथ की जा रही हिंसक गतिविधियो के विरोध में यूपी जिला अधिकारी मिल्क को ज्ञापन दिया गया जिसमें हिंदू की सुरक्षा की मांग की है।

ज्ञापन में आर्य प्रतिनिधि सभा रामपुर के जिला अध्यक्ष गंगाराम आर्य, थान सिह, प्रेम पाल सिंह समेत अनेक लोग शामिल रहे।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. से निकाली गई तिरंगा यात्रा

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ द्वारा दिनांक १५ अगस्त को आर्य प्रतिनिधि सभा प्रांगण से शहीद स्मारक तक तिरंगा यात्रा का शुभारम्भ सभा प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा द्वारा झण्डी दिखा कर किया गया। जो १०६० चौराहा गोमती नगर में जाकर एक सभा में परिवर्तित हो गई। जिसे जिला सभा प्रधान डा० निष्ठा विद्यालंकर, पूर्व विधायक कुबेर भंडारी आचार्य विमल आर्य, काशी प्रसाद शास्त्री आदि ने संबोधित किया।

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–पंकज जायसवाल भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस,
5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।